137वाँ संस्करण
अगस्त 2026

मन की बात

नशा मुक्त भारत

एक सामूहिक संकल्प

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

प्रधानमंत्री का संदेश

सूची क्रम

मुख्य आलेख

22 **भारतराज्य :** भारत की भूली-बिसरी रियासतों को मिला डिजिटल ठिकाना

26 **विकसित भारत के लिए नशा मुक्त युवा**

32 **पीएम स्वनिधि योजना :** महिला स्ट्रीट वेंडर्स को सशक्त बनाता एक प्रयास

42 **प्रकृति, उद्यम और सशक्तीकरण :** बदलाव की राह दिखाती महिलाओं की कहानियाँ

50 **एवोकाडो से कृषि समृद्धि तक :** किसानों की आय का नया विकल्प

संक्षेप में

30 **सूर्यपथ तिरंगा :** हर घर तिरंगा 2026 के अंतर्गत एक प्रमुख पहल

40 **स्वच्छता का जज़्बा :** पटवाई की सामुदायिक कहानी

58 **'वोकल फ़ॉर लोकल' :** 'उत्सव अर्थव्यवस्था' और आत्मनिर्भरता का संकल्प

लेख

36 **सेवा और स्वच्छता का संगम :** स्वच्छतर श्री अमरनाथ जी यात्रा 2026 –मनोज सिन्हा

46 **वैश्विक शांति एवं बालिका शक्ति के लिए :** मिशन 'शक्तिसैट' –डॉ. श्रीमति केसन

54 **उत्तम कुमार :** बांग्ला सिनेमा के कालजयी नायक –देबाशीष सेन शर्मा

60 प्रतिक्रियाएँ

मेरे प्यारे देशवासियो
नमस्कार

'मन की बात' के इस नए एपिसोड में आप सभी का मैं एक बार फिर स्वागत करता हूँ। आप सब जानते हैं कि ये एक ऐसा मंच है जहाँ हम नए प्रयासों को सामने लाते हैं। देशवासियों के Innovative Ideas पर चर्चा करते हैं। इनमें से कितने ही Ideas ऐसे होते हैं जिनके पीछे लोगों ने जीवन की अथक ऊर्जा लगाई होती है।

साथियो, कुछ समय पहले social media पर किसी ने लिखा था "आषाढ़ी एकादशी के पावन अवसर पर मुझे यह बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि इतिहास को रोचक बनाने के अपने प्रयास का शुभारंभ कर रहा हूँ।" उन्होंने आगे बताया ये idea बहुत ही simple है। आप इस website पर जाएँ और कोई भी एक वर्ष चुन लें। यहाँ आपको आसानी से पता चलेगा कि उस समय भारत के किस हिस्से पर किसका शासन था। मुझे भी यह काफी दिलचस्प लगा। मैंने सोचा कि इसके बारे में और अधिक जानकारी ली जाए। मुझे पता चला कि ये काम मुंबई में रहने वाले श्रीमान कृष्णा शेषाद्री जी ने किया है। मजे की बात ये है कि कृष्णा जी ने website का नाम भी बहुत simple रखा है www.bharatrajya.com उन्होंने जो प्रयास किया है, उसकी जानकारी आप लोगों तक भी जरूर पहुँचनी चाहिए। इसलिए, मैंने सोचा कि क्यों न सीधे श्री कृष्णा जी से ही बात की जाए।

साथियो, कृष्णा जी हमारे साथ फोन पर जुड़ रहे हैं।

प्रधानमंत्री : कृष्णा जी नमस्ते।

कृष्णा शेषाद्री : नमस्ते sir नमस्ते।

प्रधानमंत्री : भाई, मुझे पता चला है, न आप tech की दुनिया से हो, न आप history teacher हो, फिर भी, आपने technology का प्रयोग करके history की site बना डाली। तो मुझे बहुत उत्सुकता है, ये सब कैसे हुआ?

कृष्णा शेषाद्री: धन्यवाद sir आपसे बात करके बहुत मेरा बहुत बड़ा सौभाग्य है तो sir मेरे बारे अगर मैं थोड़ा बताऊँ, तो sir मैं एक engineer था, फिर मैंने MBA किया, फिर मैं marketing field में चला गया लेकिन ये सब जब भी करता

था तब भी मेरे को बचपन से इतिहास (History) में बहुत interest था। तो I always wanted to do something on History, how to make it interesting and मेरे को ये भी लगता था कि हम जैसे History सिखाते हैं उसमें हम बहुत improvement कर सकते हैं उसमें हम बहुत बदलाव लेकर आ सकते हैं, History को एक कहानी बनाकर लोगों तक पहुँचा सकते हैं।

प्रधानमंत्री : कृष्णा जी, भारतीय इतिहास का ऐसा कौन-सा पहलू है, जिसके बारे में आपको लगा कि इसकी जानकारी ज्यादा-से-ज्यादा लोगों को होनी चाहिए?

कृष्णा शेषाद्रीः Sir, अगर हम भारतीय इतिहास जैसे हमारे स्कूलों या कॉलजों में सिखाया जाता है जैसा आप देखते हो वो एक कोई एक empire या कोई एक kingdom उसके दृष्टिकोण से, उसके नजरिए से सिखाया जाता है और वो empires को disproportionate attention भी मिलता है। इस चक्कर में बाकी के बहुत सारे जो हमारे साम्राज्य थे, जो महान साम्राज्य थे जैसे cholas, pallavas, karkota dynasty था कश्मीर में Ahoms थे जिन्होंने कम से कम 600 साल असम में अपनी संस्कृति और अपनी values system को बरकरार रखा ये सबके बारे में हम नहीं जानते। तो मैंने सोचा कि कोई ऐसा कोई site बनाएँ जो ऐसे महान साम्राज्य को भी लोगों से इनको introduce किया जाए।

प्रधानमंत्री : कृष्णा जी आप इतनी मेहनत करते हैं, मैं ऐसे ही आपको hypothetical सवाल पूछता हूँ। अगर आपको Indian History के किसी भी तीन लोगों से बातचीत का अवसर मिले, तो आप किनसे बात करना चाहेंगे और क्यों?

कृष्णा शेषाद्रीः हाँ सर, तो पहले मैं बात करूँगा, राजाराजा चोला या राजेन्द्र चोला सर जो चोला साम्राज्य के सबसे most powerful या सबसे important राजाओं में से थे, तो मैं उनसे ये जानना चाहूँगा कि पहले उनको ये vision कैसे आया जैसे उन्होंने बृहदेश्वर temple या गंगईकोंडा चोलपुरम जो बड़े बड़े मंदिर हैं, शिवजी के मंदिर हैं, वो execute करने के लिए वो vision कहाँ से आया वो planning कैसे की, उनको वो thought कैसे आया कि हम ऐसा कुछ बना के जाएँ जो अगले हजार या दो हजार साल तक दूसरे लोगों को प्रेरित कर सके। तो वो मुझे उनसे जानना है। और दूसरी जो personality हैं ये actually मेरे हिसाब से Indian history में एक बहुत under rated personality है। सर उनका नाम है हेमू, तो हम उनके बारे में ज्यादा-से-ज्यादा Indian इतिहास में दो या तीन line पढ़ते हैं। हमको ये नहीं पता है कि वो जो हेमू जो थे वो एक common man थे, एक साधारण इंसान थे, वो एक व्यापारी थे, उधर से उन्होंने एक empire खड़ा किया और वो not only वो एक empire builder थे वो एक military thinker भी थे, military genius थे जिन्होंने अपने carrier में 23 लड़ाइयाँ लड़ीं उसमें से उन्होंने 22 लड़ाइयाँ जीतीं, तो उनका thought process कैसा था, और वो कैसे एक आम आदमी से इतने बड़े राजा बने, वो उनका वो journey मैं जानने की बहुत दिलचस्पी रखता हूँ सर। और तीसरी जो है ये this is a very interesting personality, she is a women sir, त्रिभुवन महादेवी, तो ये जो है एक ओडिशा में एक kingdom है जिसका नाम था भौमाकारा dynasty

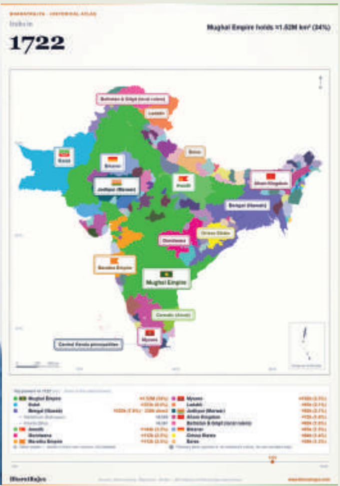

कृष्णा शेषाद्री, संस्थापक, भारतराज्य

तो इनकी भी कहानी बहुत दिलचस्प है। उन्होंने जब 850 ईस्वी के आसपास जो साल में उनके जो neighbour पाल empire ने, इनके empire पर धावा बोल दिया था सर, और इनके राजा जो इनके husband थे वो उस लड़ाई में शहीद हो गए थे। और इसकी वजह से वो empire बहुत छोटा हो गया और उसके जो सरदार थे, उसके जो leaders थे वो empire छोड़कर जाने लग गए थे तो ये जो त्रिभुवन महादेवी जो lady थी इन्होंने वो सरकार सम्भाली and she became one of the first independent rulers in the history of India और उन्होंने सरकार को not only stabilize किया but इतना उसको powerful बना दिया कि वो अगले सौ साल तक कलिंगा और वो area में राज करते रहे। तो these are three interesting personalities whom I would like to meet in history sir.

प्रधानमंत्री : कृष्णा जी आपको अब लगता है कि इतिहास को जी रहे हैं। आप पूरी तरह इतिहास में डूब चुके हैं। देखिए मैंने भी बड़े उत्सुकता के साथ आपकी site देखी है और मुझे सबसे interesting ये लगा कि आपकी site पर एक ऐसा tab है, जहाँ लोग corrections और suggestions भी दे सकते हैं। ऐसे constructive feedback के लिए open रहना; ये अपने आप में बहुत बड़ी बात है। क्या आपको लोगों से सुझाव मिलना शुरू हुआ है क्या? और आप उन पर कैसे काम करते हैं?

कृष्णा शेषाद्रीः हाँ सर इन लोगों से बहुत सुझाव आते हैं सर। सुझाव दो प्रकार के आते हैं। एक सुझाव ऐसे आते हैं जो हमको correction suggest करते हैं – इस प्रदेश में, इस time में, इस राष्ट्र में ये राजा थे या इस time में ये युद्ध हुआ था तो ऐसे कुछ suggestion आते हैं। दूसरे suggestion आते हैं कि आप इस website में ये feature भी डाल सकते हैं या वो feature भी डाल सकते हो तो हमको दोनों प्रकार के suggestion आते हैं तो जैसे अगर हमको ऐसा एक suggestion आए कि इस प्रदेश में, इस राजा ने, इस time पे राज किया था तो हम वो suggestion को लेते हैं, तो हमारे जो sources हैं जैसे हमको किसी ने suggestion में दिया था कि आपने India को तो दिखा दिया अगर प्रदेश के level पर भी दिखा सकते हैं तो और अच्छा होगा तो हमने वो feature implement किया और फिर हमने दूसरे feature आया था जिसमें हमने एक trump card जैसा बनाया था सारे empire के data statistics

देके ताकि वो बच्चों तक पहुँच सके तो किसी ने एक suggestion दिया था कि उसको आप एक जगह पर लेकर आइए ताकि हम सब download करके हम सब share कर सके तो वो हम feature implement कर रहे हैं। तो हमे इतना जानना important है कि हम गलती करेंगे, हम क्योंकि हम सर्वश्रेष्ठ नहीं हैं और वो जानके ही हमने वो correction का tab लगाया ताकि ये हम सबकी site हो और आगे जाके सारे contributions के हिसाब से हम एक ऐसा site बनाए जो अगले कुछ साल तक इतिहास को एक मजेदार subject बनाए।

प्रधानमंत्री : कृष्णा जी आपने सचमुच में एक बहुत बड़ा काम किया है। अच्छा History के अलावा आपकी कई सारी Hobbies होगी और भी बहुत कुछ करते होंगे आप ?

कृष्णा शेषाद्रीः हाँ, नहीं sir हम थोड़े boring type आदमी हैं sir.

प्रधानमंत्री : हँसते हुए

कृष्णा शेषाद्रीः हम technology में बहुत दिलचस्पी रखते हैं और इतिहास में रखते हैं और जब अब technology और इतिहास मिल गया इसी में हम डूबे रहते हैं पूरा दिन।

प्रधानमंत्री : चलिए कृष्णा जी आपको मेरी बहुत-बहुत शुभकामना है आपने एक अच्छी शुरुआत की है और आपका तरीका भी ऐसा है कि लोग जुड़ेंगे मुझे पूरा विश्वास है मेरी तरफ से आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

साथियो, कृष्णा जी का ये प्रयास सिर्फ इतिहास के विद्यार्थियों को नहीं, ये हम सबको अपने अतीत को रोचक तरीके से जानने में मदद करेगा। आपके पास भी ऐसे प्रयासों के बारे में जानकारी हो, तो उसे जरूर share करें।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'नशा मुक्त युवा फॉर विकसित भारत' यह अभियान इस समय पूरे देश में तेजी से आगे बढ़ रहा है। इसका लक्ष्य बिल्कुल साफ है – नशा मुक्त युवा, Drug Free India. बहुत सारे लोग, विशेषकर हमारे युवा बहुत बड़ी संख्या में इसका हिस्सा बन रहे हैं। आखिर यह भारत के युवाओं की health, उनकी happiness और उज्ज्वल भविष्य के लिए ही हमारा सामूहिक संकल्प है।

साथियो, नशे की लत सिर्फ एक व्यक्ति को अपने लपेटे में नहीं लेती, इसके दुष्परिणाम पूरे परिवार और समाज को भी झेलने पड़ते हैं। मैं उन लोगों की सराहना करूंगा जो drugs के खिलाफ दूसरों को जागरूक करते हैं और नशे की लत से जूझ रहे लोगों की मदद में आगे आते हैं। नशा मुक्त भारत के लिए क्या आप कोई powerful slogan बना सकते हैं? क्या हमारे young musicians ऐसे songs बना सकते हैं, जिनमें drug free life का message हो? क्या students और theater groups दिल को छू लेने वाले short plays लिख सकते हैं जिनमें drugs के खतरों के साथ-साथ उनसे बाहर निकलने का रास्ता भी हो। हमारे देश में बेहतरीन content creaters की कमी नहीं हैं। मेरा आग्रह है कि वे अलग-अलग भाषाओं में ऐसा content बनाएँ जिससे इस दिशा में समाज को मदद मिले। आप अपने प्रयासों को Hashtag के साथ social media पर भी जरूर share करें। कई बार creative effort formal campaign से ज्यादा असरदार होते हैं। आइए, भारत के युवा को नशे से दूर रखने, नशे से मुक्त रखने – इस पवित्र कार्य में हम सब अपनी भूमिका निभाएँ। आप अपने प्रयास को #नशा मुक्त युवा के साथ social media पर भी जरूर share करें।

मेरे प्यारे देशवासियो, अगस्त के महीने में हमें हर तरफ देशभक्ति के अनेक रंग देखने को मिलते हैं। इस समय हर व्यक्ति के मन में राष्ट्र-प्रेम की भावना और प्रबल हो जाती है। 'National Handloom Day' और 'भारत छोड़ो आंदोलन' की वर्षगांठ से लेकर विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस इसे खास बनाते हैं। 'स्वतंत्रता दिवस' और 'National Space Day' इसके अवसर तो हर देशवासी को गर्व से भर देते हैं। 'हर घर तिरंगा अभियान' इस भावना को और मजबूत करता है। 'वंदे मातरम्' के डेढ़-सौ वर्ष पूरे होने से यह साल और भी विशेष बन गया है। इस बार 8 करोड़ से अधिक तिरंगा selfie upload की गई और तिरंगे का ये उत्सव केवल भारत तक ही सीमित नहीं रहा – इस साल 'सूर्यपथ तिरंगा' के जरिए हमारा तिरंगा दुनिया-भर की एक अनोखी यात्रा पर निकला। Fiji के सुवा में सूरज की पहली किरण के साथ तिरंगा फहराया गया। इसके बाद Asia, Africa, Europe और फिर America के San Francisco तक Indian Missions और Posts पर तिरंगा लहराता गया। आप कल्पना कर सकते हैं, ये दृश्य कितने अद्भुत रहे होंगे। जैसे-जैसे दुनिया-भर में सूरज आगे बढ़ता गया, वैसे-वैसे भारतीय तिरंगा भी लहराता गया। ऐसे प्रयास समाज को एक सूत्र में पिरोते हैं। इनसे देश के साथ भी हमारा जुड़ाव और गहरा होता है। इन प्रयासों में शामिल सभी लोगों को मेरी बहुत-बहुत बधाई।

मेरे प्यारे देशवासियो, हमारे शहरों और कस्बों की सड़कों पर रोज सुबह से शाम तक, लाखों महिलाएँ अपने-अपने काम में जुटी रहती हैं। कोई सब्जी बेचती है, कोई फल, कोई चाय का ठेला लगाती है, तो कोई फूल, दीये और पूजा की

सामग्री बेचती हैं। कई बार, बस थोड़ी सी पूँजी की कमी, इनके कारोबार को आगे बढ़ने से रोक देती है। लेकिन अब ऐसी लाखों माताओं-बहनों को 'PM स्वनिधि योजना' से नई ताकत मिल रही है। 'महिला सशक्तीकरण' के इस पहलू की उतनी चर्चा नहीं होती, जितनी होनी चाहिए। 'PM स्वनिधि योजना' की लाभार्थियों में करीब 46 प्रतिशत महिलाएँ हैं। यानी देशभर में लगभग 35 लाख महिलाएँ इस योजना से जुड़कर अपने कारोबार को आगे बढ़ा रही हैं।

साथियो, गाजियाबाद की बबीता शर्मा जी, इसका बहुत अच्छा उदाहरण है। बबीता जी, पूजा की सामग्री का एक छोटा सा stall लगाती थीं। फूल, दीये, अगरबत्ती, नारियल जैसी चीजें बेचकर, वो अपने परिवार की आजीविका में हाथ बंटाती थीं। मेहनत खूब थी, लेकिन कारोबार बढ़ाने के लिए पूँजी की जरूरत थी। 'PM स्वनिधि' से उन्हें आर्थिक मदद मिली। उन्होंने अपने stall पर सामान बढ़ाया, कारोबार का विस्तार किया। ग्राहक बढ़े, आमदनी बढ़ी और धीरे-धीरे सड़क किनारे का उनका छोटा-सा stall एक दुकान में बदल गया।

साथियो, बेंगलुरु की टी.एस. निंगम्मा जी की मिसाल भी बहुत प्रेरक है। निंगम्मा जी और उनके पति ने मिलकर इडली, डोसा और सांभर बेचने का छोटा सा काम शुरू किया। काम चल पड़ा, लेकिन इसे आगे बढ़ाने के लिए पूंजी की जरूरत थी। निंगम्मा जी को भी 'PM स्वनिधि' से सहयोग मिला। उन्होंने अपनी Cart बेहतर की। सामान थोक में खरीदना शुरू किया और Menu में भी कई नई चीजें जोड़ीं। ग्राहक बढ़े, कमाई बढ़ी और परिवार की आर्थिक स्थिति बेहतर हुई। आज वो अपने तीन बच्चों को बेहतर Education देने में सक्षम हुई हैं।

साथियो, जब एक महिला का कारोबार बढ़ता है, तो उसके साथ पूरे परिवार का भविष्य आगे बढ़ता है। बच्चों की Education बेहतर होती है, घर की जरूरतें पूरी होती हैं, और महिला के भीतर आत्मविश्वास और मजबूत होता है। यही तो है 'महिला सशक्तीकरण' का एक जीवंत रूप। मैं रेहड़ी-पटरी के काम से जुड़ी सभी बहनों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, स्वच्छता की एक बहुत बड़ी खूबी होती है। जब किसी जगह को स्वच्छ रखने का संकल्प वहाँ के लोगों का अपना संकल्प बन जाता है, तो बदलाव केवल साफ-सफाई तक सीमित नहीं रहता। इससे उस जगह की पूरी पहचान ही बदल जाती है। देश के अलग-अलग हिस्सों में स्वच्छता के लिए ऐसे प्रयास, हमें निरंतर प्रेरणा देते हैं। उत्तर प्रदेश के रामपुर में एक गाँव है- पटवाई। वहाँ आकाश और रोहन नाम के दो दोस्तों ने देखा कि उनके आसपास का इलाका गंदगी से भर गया है। बस, फिर क्या था, आकाश और रोहन ने कचरे के बैग उठाए और सफाई के लिए निकल पड़े। धीरे-धीरे दूसरे युवा भी उनके साथ जुड़ने लगे। एक Team भी बन गई। जिसका नाम है- 'क्लीन-अप पटवाई'। ये युवा अब तक चार गंगा घाटों को साफ कर चुके हैं। एक टन से अधिक Plastic कचरा हटा चुके हैं। इन्होंने कितने ही तालाबों और सार्वजनिक जगहों की सफाई की है।

साथियो, इस बार श्री अमरनाथ जी की यात्रा में भी, स्वच्छता और जनभागीदारी की ऐसी ही प्रेरक तस्वीर देखने को मिली। कठिन रास्तों पर, हजारों स्वच्छता कर्मी दिन-रात सेवा में जुटे रहे। इस वर्ष यात्रा के दौरान, 400 Metric टन से ज्यादा कचरे को

collect और process किया गया। मुझे इस प्रयास की एक बात विशेष रूप से अच्छी लगी। स्वच्छता के इस अभियान में श्रद्धालु भी भागीदार बने। 16 हजार से अधिक यात्रियों ने स्वच्छता का संकल्प लिया। 10 हजार से अधिक यात्रियों को 'Responsible Yatri' Certificate भी दिया गया। यहाँ एक बहुत अनोखा प्रयोग भी हुआ। यात्रा में घोड़ों और खच्चरों के गोबर को Biogas में बदला गया और उसी Clean Energy से, 'स्वच्छ ज्योत' प्रज्वलित की गई। यानी बाबा बर्फानी की इस पवित्र यात्रा में, स्वच्छता भी सेवा और आस्था का एक रूप बन गई।

साथियो, हमारे गाँव हो या शहर, हमारी नदियाँ हों या तीर्थस्थल। इनकी पहचान हमारे व्यवहार से भी बनती है। और जब स्वच्छता इस व्यवहार में शामिल हो जाती है, उस स्थान की शोभा और बढ़ जाती है।

मेरे प्यारे देशवासियो, कभी-कभी हमारा एक छोटा सा शौक, जीवन में एक बड़ी सम्भावना का रास्ता खोल देता है। नागालैंड के फेक (Phek) जिले की वेसालु पुरो जी की यात्रा भी कुछ ऐसी ही है। वेसालु जी किसान परिवार में पली-बढ़ीं। बचपन से उन्होंने अपने माता-पिता को खेती करते देखा था और उन्हें खुद फूलों से बहुत लगाव था। साल 2021 में उन्होंने इसी शौक के साथ छोटे स्तर पर फूल उगाने की शुरुआत की। धीरे-धीरे उन्हें इसमें एक सम्भावना दिखाई देने लगी। उन्होंने देखा कि शादी-विवाह हो या फिर अन्य त्योहार, फूलों की मांग हमेशा बनी रहती है। वेसालु जी ने अपने इस शौक को आगे बढ़ाने का फैसला किया। इस सफर में उन्हें स्थानीय कृषि विज्ञान केंद्र से फूलों की वैज्ञानिक खेती की training मिली, फिर उन्होंने केवल एक-चौथाई एकड़ जमीन पर,

gladiolus के हजारों पौधे लगाए। पहले ही प्रयास में 5 हजार से ज्यादा फूल खिल उठे। साथियो, ये सफलता वेसालु जी के लिए एक नई शुरुआत बन गई। उन्होंने फूलों की खेती को और आगे बढ़ाया। जो फूल कभी स्थानीय बाजार में रह जाते थे, आज वो नागालैंड से निकलकर दिल्ली और मुंबई जैसे शहरों तक जा रहे हैं। वेसालु पुरो जी की यात्रा हमें बताती है कि शौक जब मेहनत और सही मार्गदर्शन से जुड़ जाता है, तो वह नई सम्भावनाओं का रास्ता खोल सकता है।

मेरे प्यारे देशवासियो, हमारे आस-पास ऐसे कई लोग हैं, जो एक छोटा-सा प्रयास शुरू करते हैं और देखते-ही-देखते उनका प्रयास बहुत से लोगों के जीवन में बदलाव का रास्ता बना देता है। ओडिशा के देबरीगढ़ में एक गाँव है 'धोड्रोकुसुम'। कुछ साल पहले तक इस गाँव की मैथिली भुए जी लगभग हर दिन जंगल जाती थी- कभी जलावन की लकड़ी लेने, कभी महुआ और केंदु पत्ता चुनने, तो कभी बांस की कोपलें और दूसरी वन उपज लाने। उनके और वहाँ के अनेक परिवारों की बहुत सी जरूरतें इसी जंगल से पूरी होती थीं, लेकिन फिर मैथिली जी देबरीगढ़ Eco-Tourism से जुड़ीं। यहाँ से जंगल के साथ उनका रिश्ता एक नई दिशा में बदल गया। अब जंगल का संरक्षण भी उनकी आजीविका का माध्यम बन गया। साथियो, मैथिली जी के जीवन में आए इस बदलाव ने दूसरी महिलाओं को भी प्रेरित किया। आज 60 से अधिक महिलाएँ जंगल के संरक्षण में जुड़ चुकी हैं। कोई वन्य-जीवों की सुरक्षा का दायित्व सम्भाल रही हैं, कोई घास के मैदानों के विकास से जुड़ी हैं, तो कुछ महिलाएँ Eco-Tourism activities में

योगदान दे रही हैं। साथियो, मैथिली जी और देबरीगढ़ की इन बहनों ने दिखाया है कि प्रकृति की रक्षा भी हो सकती है और जीवन में समृद्धि भी आ सकती है। इन सभी बहनों का प्रयास हम सभी के लिए बहुत बड़ी प्रेरणा है।

साथियो, आज हमारी बेटियों के सपनों की उड़ान, धरती से निकलकर अंतरिक्ष तक पहुँच रही है और आपको यह जानकर गर्व होगा कि भारत, ऐसे सपने देखने वाली दुनिया की हजारों बेटियों को एक साथ जोड़ रहा है। इस प्रयास का नाम है Mission ShaktiSAT। इसके माध्यम से 108 देशों की 12 हजार छात्राओं को Satellite Technology सीखने और innovation के क्षेत्र में आगे बढ़ने का अवसर मिल रहा है। 23 अगस्त, National Space Day पर इस मिशन की एक सुंदर तस्वीर उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नोएडा में देखने को मिली। गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय में Mission ShaktiSAT के दूसरे चरण की शुरुआत हुई। इस अवसर पर दुनिया के अलग-अलग देशों और भारत से आई करीब 100 छात्राएँ एक साथ जुटीं। भारत के दूर-दराज क्षेत्रों से चुनी हुई छात्राएँ भी इसमें हिस्सा ले रही हैं। इस पूरे प्रयास का लक्ष्य भी बहुत खास है। पूरी तरह छात्राओं की भागीदारी से तैयार एक satellite को Moon की Orbit में भेजने की तैयारी है। साथियो, मुझे विश्वास है कि इनमें से अनेक छात्राएँ आने वाले समय में science, technology और innovation के क्षेत्र में अपनी नई पहचान बनाएँगी।

मेरे प्यारे देशवासियो, आजकल Avocado फल की बड़ी धूम है। इस फल को पहले शायद ही कोई जानता था। इसकी value और demand दोनों कम थी, लेकिन आज इसे

dining table पर खूब देखा जा रहा है। आज यह health और premium market की पसंद बन गया है। हमारे किसान भाई-बहनों के लिए भी ये बहुत मददगार है। आंध्र प्रदेश में कडपा के वरदराज जी का उदाहरण है। वे कई वर्षों से अपने खेत में टमाटर और केले की खेती कर रहे थे। एक दिन उन्होंने अपने दोस्तों के farm में avocado की फसल देखी। इसके बाद उन्होंने Youtube से इस पर जानकारी जुटाई। अब तक वे करीब 4 टन avocado का उत्पादन कर चुके हैं। आज वे सीधे स्थानीय दुकानों को इसकी सप्लाई कर रहे हैं। नई फसल, वैज्ञानिक सलाह और सीधी marketing से उनके छोटे से farm की कमाई पूरी तरह बदल गई है। तमिलनाडु के कोडाइकनाल के किसान चन्द्रशेखरन जी ने आधी हेक्टेयर जमीन पर avocado उगाना शुरू किया। उन्हें इसके अच्छे दाम मिल रहे हैं और कमाई भी बढ़ी है। कर्नाटक में चिकमगलुरु के कुछ किसान भाई-बहनों ने तो coffee plantation के बीच avocado लगाया है। इससे उन्हें coffee और काली मिर्च के साथ अतिरिक्त कमाई भी हो रही है। साथियो,

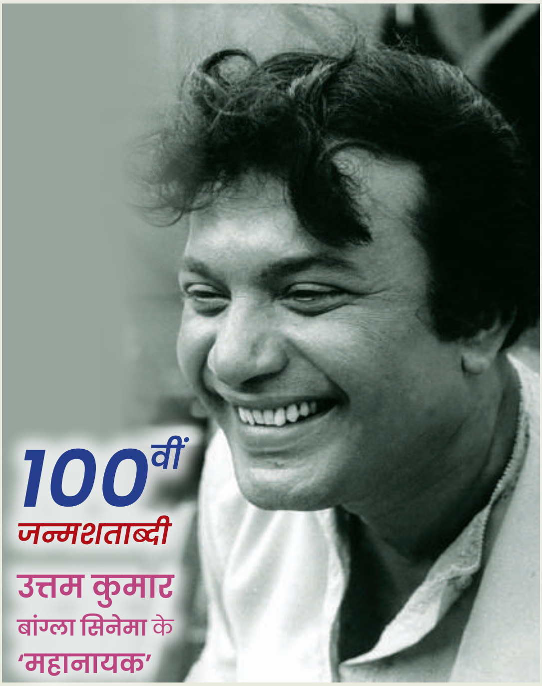

हम शहरों के restaurant में अक्सर avocado toast के बारे में सुनते हैं, लेकिन इसी avocado के जरिए हमारे innovative किसानों ने कमाई की एक नई recipe ढूँढ़ ली है। यानी अपने देश के avocado से आपके toast का स्वाद भी बढ़ा और किसानों की आमदनी भी बढ़ गई है।

मेरे प्यारे देशवासियो, कुछ ही दिनों में 3 सितम्बर को हम महानायक उत्तम कुमार जी की जन्म-शताब्दी मनाएँगे। साथियो, उत्तम कुमार जी एक versatile actor थे, जो अपने अभिनय से लोगों के दिलों में रच-बस गए। Film lovers का मानना है कि श्रीमान सत्यजीत रे ने फिल्म

'नायक–the hero' की पूरी script महानायक उत्तम कुमार जी को ध्यान में रखकर लिखी थी। श्रीमान सत्यजीत रे ने कहा था कि उनमें dignity के साथ–साथ अद्भुत emotional depth भी था। किरदार को वो जीवंत बनाने के लिए बहुत मेहनत करते थे। उत्तम कुमार जी अपनी सहजता के साथ ही philanthropy के लिए भी जाने जाते थे। उनके जीवन से कभी भी हार न मानने की एक और बड़ी सीख भी मिलती है। उनकी शुरुआती फिल्में बहुत नहीं चलीं, लेकिन उन्होंने अपने काम पर focus बनाए रखा। इसी का परिणाम था कि उन्होंने इतनी ऊँचाई हासिल की। साथियो, मुझे ध्यान है कि जब मैं कोलकाता में road show कर रहा था, तो मैं उत्तम कुमार जी के घर के सामने से भी गुजरा था। वहाँ मुझे एक व्यक्ति ने उनकी एक तस्वीर भी भेंट की थी। मैं एक बार फिर महानायक उत्तम कुमार जी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। वे हमेशा हम सब के दिलों पर राज करते रहेंगे।

"महानायक उत्तम कुमार चीरोदिन मानुषेर हृदये राज कोरबेन"

मेरे प्यारे देशवासियो, हमारे पर्व और त्योहार, हमारी परम्पराओं के साथ–साथ, हमें एक–दूसरे से जुड़ने का भी अवसर देते हैं। आने वाले दिनों में हम और भी कई महत्त्वपूर्ण पर्व मनाने जा रहे हैं। 4 सितम्बर को जन्माष्टमी का पावन पर्व है। सितम्बर में ही हम विश्वकर्मा पूजा भी मनाएँगे। इस अवसर पर अपने आसपास के कारीगरों, शिल्पकारों और विश्वकर्मा साथियों का सम्मान करना चाहिए। कुछ महीनों बाद दीपावली भी आने वाली है, इसकी तैयारियाँ भी धीरे–धीरे शुरू हो रही हैं। **त्योहारों के इस मौसम में, मैं एक बार फिर, आपसे, vocal for local का आग्रह दोहराऊँगा** और

vocal for local का मतलब केवल मिट्टी के दीये खरीदना नहीं है, इसका vision बहुत बड़ा है। हम अपने घर के लिए जो भी सामान खरीदते हैं, उसे एक बार जरूर देख लें कि वो भारत में बना हो। भारत के आत्मनिर्भर बनने का मार्ग, भारत में बनी चीजों पर गर्व करने से ही प्रशस्त होगा। इस संदेश को ज्यादा-से-ज्यादा लोगों तक पहुँचाना भी हमारी जिम्मेदारी है। हमारे creative world के साथियों, influencers और celebrities की भी इसमें बहुत बड़ी भूमिका है। मेरा आपसे आग्रह है कि स्वयं भी vocal for local को अपनाए और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित कीजिए।

साथियो, आपके आसपास भी ऐसे अनेक लोग होंगे, जो अपने छोटे-छोटे प्रयासों से समाज में बड़ा बदलाव ला रहे हैं। आप उनके बारे में 'मन की बात' के लिए जरूर लिखिए। आपका भेजा हुआ अनुभव देश के किसी कोने में, किसी के लिए, नई प्रेरणा बन सकता है। मुझे आपके सुझावों और अनुभवों की प्रतीक्षा है।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

भारतराज्य

भारत की भूली-बिसरी रियासतों को मिला डिजिटल ठिकाना

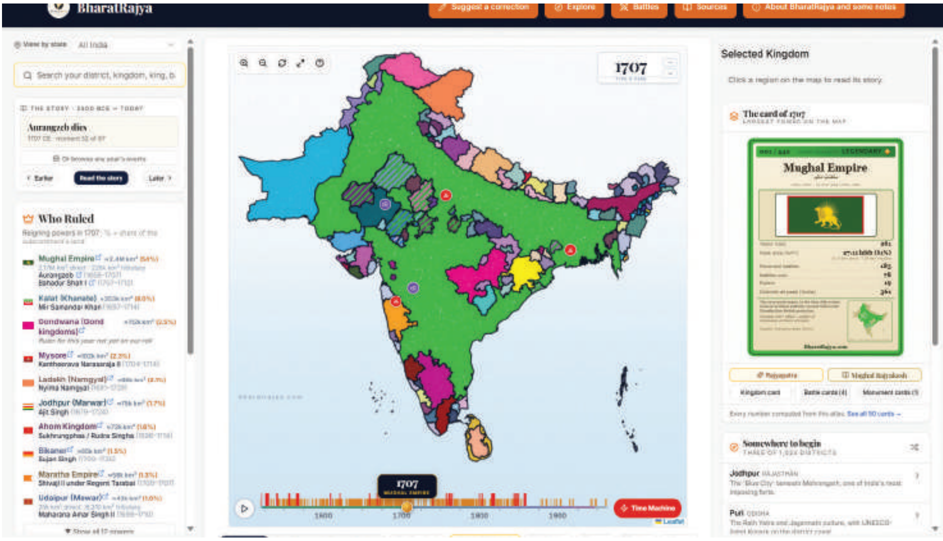

भारत का इतिहास कई पीढ़ियों से पाठ्यपुस्तकों में मानचित्रों और तिथियों की लम्बी-चौड़ी सूचियों से ही समझा जाता रहा है। लाखों विद्यार्थियों ने अतीत को अलग-अलग, एक-दूसरे से पृथक और स्थानीय साम्राज्यों की श्रृंखला के रूप में पढ़ा है। बहुत कम ऐसा हुआ कि वे समूचे भारत का इतिहास एक साथ समग्रता में देख सकें। यह स्थिति बदलने का सपना कृष्णा शेषाद्री के मन में 15 वर्ष से पल रहा था। इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने के बाद एमबीए करके मार्केटिंग के क्षेत्र में आए शेषाद्री एक ऐसा डिजिटल एटलस बनाना चाहते थे जो किसी को भी, भारतीय उपमहाद्वीप का इतिहास समय के साथ बदलते, उदित होते, विस्तार करते, अपनी सीमाएँ बढ़ाते और फिर नए रूप में ढलते हुए देखने का अवसर दे सके।

उनकी यह कल्पना अंततः 'भारतराज्य' (bharatrajya.com) के रूप में साकार हुई। यह एक इंटरैक्टिव ऐतिहासिक एटलस है जो लगभग एक हज़ार ज़िलों में सदियों में हुआ राजनीतिक विकास दर्शाता है। हालांकि शेषाद्री के लिए चिरकाल से मन में पल रहा सपना, पूरी तरह कार्यशील सार्वजनिक डिजिटल टूल में बदलना एक बड़ी तकनीकी चुनौती थी।

दृष्टि का विस्तार और राष्ट्रीय स्तर पर पहचान

इस मंच ने, पारम्परिक शिक्षा में समूचे भारत के इतिहास को एक ही समय-रेखा पर समग्र रूप से देख पाने की बुनियादी कमी का सीधा समाधान किया है। पाठ्यक्रमों में अक्सर इतिहास को किसी एक काल खंड में, किसी एक प्रमुख क्षेत्र की दृष्टि से पेश किया जाता है जिससे यह समझने की कमी रह जाती है कि उसी काल में देश के अन्य हिस्सों में किस का शासन था। शेषाद्री ने इस ओर भी ध्यान दिलाया कि इतिहास के पाठ्यक्रम में जहाँ उत्तर भारत की प्रमुख शक्तियों पर ही ज़ोर दिया गया, वहीं चोल, पल्लव, कश्मीर के कार्कोट वंश और असम के अहोम जैसे महत्त्वपूर्ण राजवंश जिन्होंने लगभग छह शताब्दी तक अपनी संस्कृति और शासन व्यवस्था बनाए रखी थी, उनकी जानकारी को इतिहास की मुख्यधारा में पर्याप्त स्थान नहीं मिला।

कृष्णा शेषाद्री, संस्थापक, भारतराज्य

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' के 137वें अंक में जब इस पहल का उल्लेख किया तो इसने राष्ट्रीय स्तर पर ध्यान आकर्षित किया। प्रधानमंत्री ने इस मंच की सराहना करते हुए कहा कि इसके माध्यम से इतिहास हर एक के लिए रोचक और सहज बन सकता है। उन्होंने बताया कि कोई भी वर्ष चुनकर यह देखा जा सकता है कि उस समय भारत के किस क्षेत्र पर किसका शासन था।

जेनरेटिव एआई का उपयोग

शेषाद्री बताते हैं कि उन्हें इतिहास से

गहरा लगाव था। उनका दृढ़ विश्वास था कि इतिहास कहानी की तरह पढ़ाया जाए तो लोगों को आजीवन याद रहता है पर यदि इसे केवल तिथियों तक सीमित कर दिया जाए तो लोग सवाल कर सकते हैं कि इसे पढ़ने की ज़रूरत ही क्यों है। पिछले पंद्रह वर्ष से उनके पास बस एक ही चीज़ की कमी थी और वो थी तकनीकी कोडिंग क्षमताः

“विचार तो मेरे पास था और यह भी बिल्कुल स्पष्ट था कि मैं क्या करना चाहता हूँ। पर जिस चीज़ की कमी थी, वह था उस विचार को यथार्थ में बदलने के लिए आवश्यक तकनीकी कौशल।”

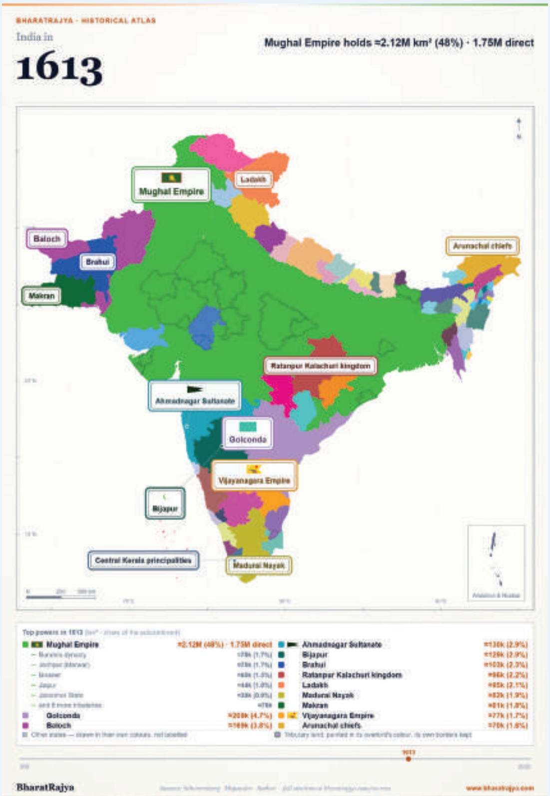

जेनरेटिव एआई ने यह तकनीकी कमी दूर करने में अहम भूमिका निभाई। शेषाद्री ने एआई की मदद से बार-बार परीक्षण और त्रुटियाँ दूर करते हुए एक-एक पंक्ति और एक-एक प्रॉम्प्ट के माध्यम से इस जटिल मंच का निर्माण किया। एआई ने एक ऐसे व्यक्ति के लिए जो पेशेवर डेवलपर नहीं था, एक इंटरैक्टिव वेब आर्किटेक्चर तैयार करना सम्भव कर दिया जिसमें लगभग एक हज़ार ज़िलों से सम्बंधित काल-खंड और भौगोलिक आँकड़े संसाधित किए जा सकें।

इस उपलब्धि को रेखांकित करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने मन की बात में एआई-संचालित इस परियोजना की सराहना की और कहा कि इससे भारत के अतीत को जानने-समझने और इसका इतिहास खोजने की सुविधा सर्वसुलभ हो सकी है।

‘भारतराज्य’ पर इतिहास का अन्वेषण कैसे करें

यह वेबसाइट इस तरह तैयार की गई है कि इसे कोई भी व्यक्ति– चाहे वह विद्यार्थी हो, परीक्षा की तैयारी कर रहा हो या अपने शहर का इतिहास जानने को उत्सुक हो– आसानी से, और रुचिकर

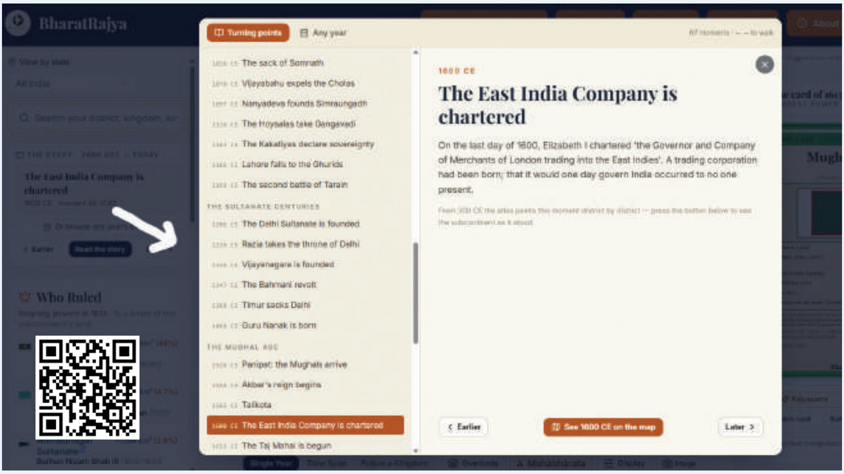

तरीके से उपयोग कर सके। इसे उपयोग करने का तरीका इस प्रकार है:

- **समय स्लाइडर इस्तेमाल करें:** वेबसाइट के केंद्र में एक इंटरैक्टिव टाइमलाइन दी गई है। आप स्लाइडर को अलग-अलग वर्षों के बीच क्लिक करके खींचकर देख सकते हैं कि समय के साथ कैसे साम्राज्यों का विस्तार, संकुचन या पूरी तरह समापन हुआ।
- **कोई विशेष वर्ष चुनें:** यदि आप किसी विशेष वर्ष में, जैसे 1600 ई. में भारत के विभिन्न हिस्सों पर किसका शासन था, देखना चाहते हैं तो आप वह वर्ष टाइप करके या चुनकर देख सकते हैं। मानचित्र पर तत्कालीन विभिन्न क्षेत्रों में मौजूद सभी राज्य और शासक प्रदर्शित हो जाएँगे।
- **क्षेत्र या राजवंश के आधार पर खोजें:** आप किसी एक क्षेत्र या राजवंश जैसे चोल, मराठा या असम के अहोम पर ध्यान केंद्रित करके देख सकते हैं कि दशकों के दौरान उनके क्षेत्र का किस प्रकार विस्तार या परिवर्तन हुआ।
- **ज़िलों पर क्लिक करें:** यह मानचित्र केवल बड़े-बड़े क्षेत्रों तक सीमित नहीं है। यह भू-भाग को स्थानीय ज़िला स्तर तक विभाजित करता है। किसी ज़िले पर क्लिक करने से उस क्षेत्र की ऐतिहासिक जानकारी, प्रमुख युद्ध, क्षेत्रीय राजधानियाँ और स्थानीय समय-रेखा सामने आती है।

शेषाद्री का अपनी दिवंगत मौसी कल्पना चिट्टी की स्मृति को समर्पित यह 'भारतराज्य', एक गम्भीर और खुला स्रोत (ओपन-सोर्स) है। यह विद्यार्थियों, यूपीएससी अभ्यर्थियों और इतिहास के प्रति उत्साही लोगों को भारत के अतीत की साझा समझ विकसित करने और उसे निरंतर समृद्ध और परिष्कृत करने को आमंत्रित करता है।

विकसित भारत के लिए नशा मुक्त युवा

भारत में 35 वर्ष से कम आयु के युवाओं की 65 प्रतिशत से अधिक आबादी है। यह आबादी देश की सबसे बड़ी ताकत है और वर्ष 2047 तक 'विकसित भारत' के लक्ष्य की दिशा में इसकी यात्रा का महत्त्वपूर्ण आधार है। यह समझते हुए कि जनसांख्यिकीय शक्ति तभी राष्ट्रीय शक्ति में बदल सकती है, जब देश के युवा शारीरिक रूप से स्वस्थ, मानसिक रूप से सुदृढ़ और नशे की लत से मुक्त हों– भारत सरकार ने नशे के दुरुपयोग के खिलाफ अभियान को अपनी युवा नीति के केंद्र में रखा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 2 अगस्त, 2026 को शुरू किया गया 'नशा मुक्त युवा फॉर विकसित भारत संकल्प अभियान' इसी संकल्प की अब तक की सबसे व्यापक अभिव्यक्ति है।

पायलट प्रोजेक्ट से राष्ट्रीय आंदोलन तक

यह अभियान रातों-रात शुरू नहीं हुआ। इसकी शुरुआत काशी (वाराणसी) में एक पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर हुई थी, जिसे 'काशी घोषणा' के तहत 125 से ज्यादा आध्यात्मिक संगठनों और कई गैर सरकारी संगठनों का समर्थन मिला। यह एक ऐसी पहल है जिसमें युवाओं में नशे की समस्या से निपटने के लिए वैज्ञानिक जागरूकता, आध्यात्मिक ऊर्जा

और सांस्कृतिक आस्था को एक साथ लाया गया। इसकी सफलता से उत्साहित होकर सरकार ने इस विचार को एक पूर्ण राष्ट्रीय परियोजना का रूप दिया। 2 अगस्त, 2026 को प्रधानमंत्री ने एक राष्ट्रव्यापी वीडियो कॉन्फ्रेंस को सम्बोधित किया, जिसमें 28,000 से ज्यादा जगहों से एक करोड़ से अधिक युवा जुड़े। उन्होंने "प्रत्येक नागरिक, विशेषकर हमारे युवा" से इस आंदोलन में शामिल होने का आह्वान किया। देश भर में लगभग 10,000 जगहों पर एक साथ शपथ समारोह आयोजित किए गए, जिसमें एक करोड़ से अधिक युवाओं ने नशा मुक्ति की शपथ ली और 'नशा मुक्त युवा स्वयंसेवक' के रूप में सेवा करने का संकल्प लिया।

100 सप्ताह का जन-भागीदारी आंदोलन

यह अभियान पारम्परिक जागरूकता अभियानों से अलग है, क्योंकि यह लम्बे समय तक चलने वाला अभियान है। इसे 100 सप्ताह के जन-आंदोलन के तौर पर तैयार किया गया है। इसमें हर रविवार युवाओं के नेतृत्व में कई तरह की गतिविधियाँ आयोजित की जाएँगी—जैसे खेल प्रतियोगिताएँ, वॉकथॉन, ध्यान सत्र, सांस्कृतिक कार्यक्रम, कला प्रतियोगिताएँ और नुक्कड़ नाटक। ऐसा करने का उद्देश्य है कि लगातार नए लोग जुड़ते रहें और जमीनी-स्तर पर यह संदेश कायम रहे। जन-सेवा की भावना को सुदृढ़ करते हुए, 50वें, 75वें और 100वें हफ्ते

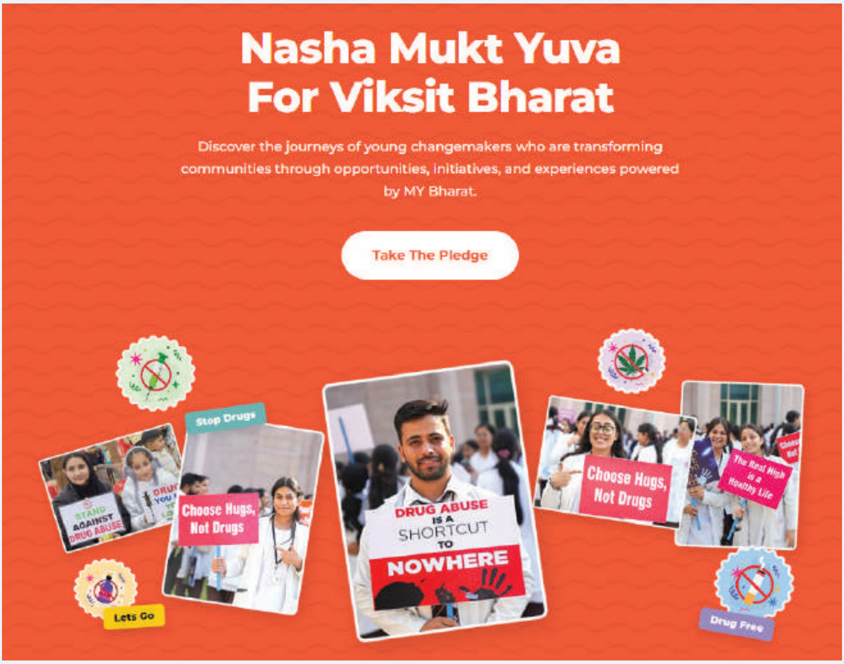

के पड़ावों पर बेहतरीन स्वयंसेवकों और संगठनों को सम्मानित किया जाएगा। केंद्रीय युवा कार्यक्रम और खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने इस पहल को 'विकसित भारत@2047' के सपने को साकार करने की दिशा में एक अहम पड़ाव बताया। उन्होंने कहा कि सरकार के युवा सहभागिता मंच 'माय भारत' (MY Bharat) को इस अभियान को आगे बढ़ाने के लिए सक्रिय किया गया है। यह मंच 2.3 करोड़ से अधिक युवाओं को जोड़ता है और जन भागीदारी के माध्यम से 'स्वच्छ भारत' तथा 'फिट इंडिया' जैसे अभियानों को जन आंदोलन में बदलने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा चुका है।

डिजिटल माध्यम पर भी 'माय भारत' ने युवाओं की रचनात्मक भागीदारी के लिए कई अवसर उपलब्ध कराए हैं। इनमें 'नशा मुक्त भविष्य की कल्पना' विषय पर निबंध लेखन, नारा लेखन प्रतियोगिता, लोकगीत तथा नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिताएँ शामिल हैं।

संस्थागत आधारः एनएपीडीडीआर और 'नशा मुक्त भारत' अभियान

युवाओं को जोड़ने का यह काम एक बड़े संस्थागत ढाँचे पर आधारित है, जिसका नेतृत्व सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय करता है, जो मादक पदार्थों की माँग में कमी लाने के लिए नोडल मंत्रालय है। मादक पदार्थों की माँग में कमी लाने के लिए 'राष्ट्रीय कार्य योजना' (NAPDDR) रोकथाम, इलाज और पुनर्वास में मदद करती है। यह काम नशा करने वालों के लिए एकीकृत पुनर्वास केंद्रों, समुदाय-आधारित साथियों के नेतृत्व द्वारा सहायता और जिला नशा मुक्ति केंद्रों के माध्यम से किया जाता है। वहीं, 2020 में शुरू किया गया और अगस्त, 2023 से

सभी ज़िलों तक बढ़ाया गया 'नशा मुक्त भारत अभियान' (NMBA) जमीनी-स्तर पर जागरूकता फैलाने का कार्य करता है। मंत्रालय के पहले राष्ट्रीय सर्वेक्षण में पाया गया कि भारत में 7 करोड़ से अधिक लोग 'सब्सटेंस यूज़ डिसऑर्डर' (नशे की लत) से प्रभावित हैं। इनमें लगभग 1.2 करोड़ बच्चे और 58 लाख महिलाएँ भी शामिल हैं। इसका समाधान ढूँढने के लिए इलाज और पुनर्वास के ढाँचे को काफी बढ़ाया गया है। यही कारण है कि इलाज कराने वाले लोगों की संख्या 2020 में 2.08 लाख से बढ़कर 2025 में 8.20 लाख से अधिक हो गई है। इसमें देश भर में फैले 768 नशा मुक्ति केंद्रों और टोल-फ्री हेल्पलाइन 14446 का अहम योगदान रहा है, जिस पर 4.69 लाख कॉल प्राप्त हुए हैं।

सम्पूर्ण समाज का प्रयास

यह अभियान इस सोच के साथ चलाया जा रहा है कि न तो समस्या को नकारा जाए और न ही इसे किसी तरह का कलंक माना जाए। परिवारों को सामाजिक प्रतिष्ठा के नाम पर नशे की लत को छिपाने के बजाय बिना किसी हिचकिचाहट के चिकित्सीय सहायता लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। साथ ही, नशे की लत से उबर रहे लोगों के प्रति आलोचनात्मक रवैया अपनाने के बजाय सम्मान का भाव रखा जाता है, क्योंकि नशे की लत से मुक्त होने के लिए बहुत हिम्मत की जरूरत होती है। कॉलेजों और विश्वविद्यालयों से भी कहा गया है कि वे अपने नियमित शिक्षण में नशे से होने वाले भयावह परिणामों व खतरों पर चर्चा करें। साथ ही अपने कैम्पस में नशा विरोधी अभियानों को चलाएँ।

देखा जाए तो, प्रधानमंत्री की प्रत्यक्ष अपील से लेकर एनएपीडीडीआर और एनएमबीए के संस्थागत आधार और 'माय भारत' के माध्यम से मिली रचनात्मक ऊर्जा जैसे सारे प्रयास एक समन्वित राष्ट्रीय संकल्प को दर्शाते हैं। नशा मुक्त युवा केवल जन स्वास्थ्य का लक्ष्य नहीं है, बल्कि यह उस आत्मविश्वासी, सक्षम और उपयोगी नागरिक समाज की अनिवार्य शर्त है, जिसकी 'विकसित भारत 2047' के लिए आवश्यकता है।

सूर्यपथ तिरंगा

हर घर तिरंगा 2026 के अंतर्गत एक प्रमुख पहल

तिरंगा सबसे पहले फिजी के सुवा में भोर के समय फहराया गया और इसके बाद 54 भारतीय मिशनों और पोस्टों पर लहराया गया। इस तरह 19 घंटे से अधिक समय तक चलने वाली ध्वजारोहण की एक अद्भुत श्रृंखला बनी, जिसने प्रशांत, एशिया, अफ्रीका, यूरोप और अमेरिका को भौगोलिक रूप से एक सूत्र में जोड़ दिया।

भारतीय उच्चायोग
सुवा, फ़िजी

भारतीय दूतावास
हनोई, वियतनाम

भारतीय उच्चायोग
कुआलालंपुर, मलेशिया

भारतीय दूतावास
ताशकंद, उज़्बेकिस्तान

भारतीय दूतावास
अबू धाबी, UAE

भारतीय दूतावास
रियाद, सऊदी अरब

भारतीय दूतावास
मॉस्को, रूस

भारतीय दूतावास
तेल अवीव, इज़राइल

भारतीय उच्चायोग
प्रिटोरिया, दक्षिण अफ्रीका

भारतीय दूतावास
पेरिस, फ्रांस

भारतीय उच्चायोग
लंदन, यूनाइटेड किंगडम

भारतीय दूतावास
रेक्याविक, आइसलैंड

भारतीय दूतावास
ब्रासीलिया, ब्राज़ील

भारतीय दूतावास
जॉर्जटाउन, गयाना

भारतीय महावाणिज्य दूतावास
सैन फ्रांसिस्को, USA

पीएम स्वनिधि योजना

महिला स्ट्रीट वेंडर्स को सशक्त बनाता एक प्रयास

हमारे शहरों और क़स्बों की सड़कों पर हर दिन लाखों महिलाएँ सुबह से लेकर शाम तक कड़ी मेहनत करती हैं। कोई ताज़े फल और सब्ज़ियाँ बेचती हैं, कोई सड़क किनारे चाय का स्टॉल लगाती हैं तो कोई फूल और पूजा की सामग्री बेचकर अपने परिवार का भरण-पोषण करती हैं। उनके सपनों और संकल्प में कोई कमी नहीं होती, लेकिन अक्सर छोटी सी पूँजी का अभाव उनके कारोबार की उड़ान को रोक देता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' में इस विषय पर प्रकाश डालते हुए बताया कि कैसे 'पीएम स्वनिधि योजना' (PM SVANidhi) इन लाखों माताओं और बहनों के लिए एक संजीवनी साबित हो रही है। इस योजना की सबसे बड़ी सफलता यह है कि इसके कुल लाभार्थियों में लगभग 46% महिलाएँ हैं। देशभर की लगभग 35 लाख महिलाएँ आज बिना किसी गारंटी वाले इस ऋण की मदद से अपने कारोबार का विस्तार कर रही हैं और वित्तीय रूप से आत्मनिर्भर बन रही हैं।

PM SVANidhi

संघर्ष से सफलता तकः ग़ाज़ियाबाद की बबीता शर्मा की कहानी

जब एक महिला का कारोबार बढ़ता है तो केवल उसकी ही नहीं, बल्कि उसके पूरे परिवार की आर्थिक स्थिति और भविष्य सँवर जाता है। ग़ाज़ियाबाद की बबीता शर्मा इसका एक बेहतरीन उदाहरण हैं। उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी हार नहीं मानी और 'पीएम स्वनिधि' की मदद से अपना रास्ता ख़ुद बनाया। लॉकडाउन के दौरान आए कठिन समय और अपनी शुरुआत को याद करते हुए बबीता जी बताती हैंः

बबीता शर्मा

"मेरे पति लॉकडाउन से पहले गुजर गए थे। मेरे बच्चे थे और मेरी एक छोटी सी गुमटी थी। लॉकडाउन में दुकानें नहीं खुल रही थीं, ऐसे में मुझे बहुत परेशानियाँ झेलनी पड़ीं। कई बार घर में खाने के लिए भी कुछ नहीं होता था। तब मेरे एक भाई ने 'पीएम स्वनिधि' के बारे में बताया। मैंने कार्ड बनवाया और मुझे दस हजार रुपये का लोन मिला। उन पैसों से मैंने अपनी

दुकान शुरू की और काम चल पड़ा।"

दस हज़ार से शुरू हुआ यह सफर यहीं नहीं रुका। बबीता जी ने योजना के क्रमिक लाभों का सदुपयोग करते हुए अपने व्यवसाय को लगातार बढ़ायाः

"मैंने वो दस हजार चुका दिए, फिर मुझे बीस हजार का लोन मिल गया। उन पैसों को भी दुकान में लगाया, जिससे मैं बच्चों का बेहतर पालन-पोषण कर पाई। इसके बाद मुझे 50 हज़ार का लोन मिला, जिसकी मदद से मैंने अपनी पक्की दुकान बना ली। आज बिना किसी सिफ़ारिश के कोई भी महिला इस योजना का लाभ ले सकती है। मैं चाहती हूँ कि सभी महिलाएँ बिना संकोच के आगे आएँ और इस योजना की मदद से आत्मनिर्भर बनें।"

ठेले से दुकान तकः बेंगलुरु की टी.एस. निंगम्मा का सफर

बेंगलुरु के गोविंदराजनगर में इडली, डोसा और दक्षिण भारतीय व्यंजन बेचने वाली टी.एस. निंगम्मा की कहानी भी यह साबित करती है कि अगर सही समय पर पूँजी का साथ मिल जाए तो छोटे से छोटा काम भी बड़ी सफलता में बदल सकता है। शुरुआती दौर में भारी ब्याज़ दरों के बोझ और जगह की समस्याओं पर बात करते हुए निंगम्मा जी कहती हैं:

"पहले पूँजी जुटाना बहुत मुश्किल था। मैं ब्याज पर क़र्ज लेती थी और उसे चुकाने में दो-तीन साल लग जाते थे। बीबीएमपी वाले भी कई बार हमारी गाड़ियाँ उठा ले जाते थे, मैंने लगभग पाँच-छह

टी.एस. निंगम्मा

जगहें बदलीं। लेकिन 'पीएम स्वनिधि' के ज़रिए मुझे जो 10,000 रुपये का क़र्ज़ मिला, उसे मैंने बिना किसी ब्याज के दबाव के सिर्फ नौ महीने में चुका दिया। इससे मुझे बहुत सुविधा हुई।"

निंगम्मा जी ने भी बबीता जी की तरह 20 हज़ार और 50 हज़ार रुपये तक का ऋण लेकर अपने इस व्यवसाय का बेहतरीन विस्तार किया और अपने परिवार के जीवन स्तर को पूरी तरह बदल दिया:

"पचास हज़ार रुपये का क़र्ज़ मिलने के बाद मैंने व्यापार को और विकसित किया, परोंठा और डोसा बनाने का सामान लिया और काम करने वाले भी रखे। ग्राहक बढ़े तो मैंने पैसे जोड़कर आधी साइट भी ले ली, बच्चों को शिक्षा दिलाई और बेटी की शादी की। अब मेरे बच्चे भी अच्छी तरह सेटल हैं। आज मैं पूरे गौरव के साथ कह सकती हूँ कि पैसे के मामले में अब कोई परेशानी नहीं है।"

अन्य महिलाओं को प्रेरित करते हुए उनका स्पष्ट संदेश है:

"सरकार जो भी सुविधाएँ दे, हमें उसका उपयोग करना चाहिए। अगर हम सही तरीक़े से क़र्ज़ चुकाते हैं, तो सरकार भी हमें पहचानकर और अधिक मदद करती है। महिलाओं को इन अवसरों का उपयोग करके आत्मनिर्भर बनना चाहिए।"

बबीता शर्मा और टी.एस. निंगम्मा जैसी लाखों महिलाओं की सफलता की ये कहानियाँ 'महिला सशक्तीकरण' का सबसे जीवंत और ज़मीनी रूप हैं। 'पीएम स्वनिधि' योजना केवल कुछ हज़ार रुपयों का ऋण नहीं है, बल्कि यह वह पूँजी है जो महिलाओं को सम्मानजनक आजीविका, आत्मविश्वास और उनके बच्चों को एक बेहतर कल की गारंटी दे रही है। जब एक महिला आर्थिक रूप से सशक्त होती है तो वास्तव में पूरा राष्ट्र सशक्त होता है।

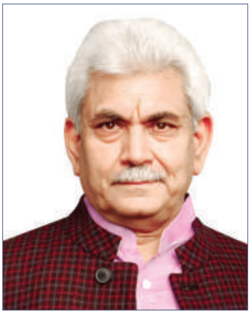

मनोज सिन्हा
उपराज्यपाल
केन्द्र शासित प्रदेश, जम्मू और कश्मीर

सेवा और स्वच्छता का संगम

स्वच्छतर श्री अमरनाथ जी यात्रा 2026

श्री अमरनाथ जी यात्रा आस्था, भक्ति और एकजुटता का एक सशक्त प्रतीक है। हर वर्ष हज़ारों श्रद्धालु पवित्र गुफा के दर्शन करने और बाबा बर्फानी को श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए ऐसे क्षेत्र से गुज़र कर यात्रा करते हैं जो आध्यात्मिक रूप से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होने के साथ-साथ पर्यावरण की दृष्टि से बेहद संवेदनशील है। यह पवित्र गुफा, लगभग 3,888 मीटर की ऊँचाई पर हिमालय के सबसे संवेदनशील पारिस्थितिकीय तंत्रों में से एक में स्थित है। अतः यह केवल एक पवित्र तीर्थयात्रा ही नहीं अपितु पर्वतों को स्वच्छ, सुरक्षित और संरक्षित रखने का हम सब का उत्तरदायित्व भी है। यही सोच, 2026 की 'श्री अमरनाथ जी यात्रा' (SANJY-2026) के लिए हमारी कार्य-प्रणाली का आधार रही। हमने पारम्परिक स्वच्छता उपायों से आगे बढ़कर एक टिकाऊ और कचरा शून्य (ज़ीरो-लैंडफिल) व्यवस्था विकसित की जिसमें प्रशासन, सफ़ाई कर्मियों, स्वयंसेवियों, स्थानीय समुदायों और श्रद्धालुओं ने मिलकर काम किया।

SANJY-2026 की तैयारियों की शुरुआत में ही मैंने सभी सम्बंधित विभागों को निर्देश दिए थे कि यात्रा के दौरान स्वच्छता और कचरा प्रबंधन पर विशेष ध्यान देते हुए इन्हें यात्रा की व्यवस्था का अभिन्न अंग बनाया जाए। हम चाहते थे कि जहाँ श्रद्धालुओं को स्वच्छ, सुरक्षित और सुखद तीर्थयात्रा का अनुभव मिले, वहीं हिमालय का संवेदनशील पर्यावरण भी सुरक्षित रह सके।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' के 137वें अंक में इन सामूहिक प्रयासों की सराहना की। उनके इस उल्लेख से उन हज़ारों लोगों के श्रम को राष्ट्रीय-स्तर पर पहचान मिली जो मौन भाव से पर्दे के पीछे काम में जुटे रहते हैं।

विशाल स्वच्छता अभियान

लखनपुर से लेकर बालटाल और पहलगाम मार्गों तक, श्री अमरनाथ जी यात्रा के लिए बढ़िया स्वच्छता एवं अपशिष्ट प्रबंधन व्यवस्था सुनिश्चित की गई। लगभग 70 किलोमीटर लम्बे यात्रा मार्ग साफ़-सुथरे बनाए रखे गए। श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए 8,000 से अधिक शौचालय एवं स्नान

सुविधाएँ तथा 15 अपशिष्ट प्रबंधन केन्द्र बनाए गए। यात्रा के दौरान 400 मीट्रिक टन से अधिक कचरा वैज्ञानिक पद्धति से निपटाया गया और लोगों में जागरूरता पैदा करके कचरे की मात्रा कम करने के प्रयास किए गए। कचरे की सुव्यवस्थित तरीक़े से छंटाई, रीसाइक्लिंग, अपशिष्ट जल उपचार, जल एटीएम जैसी व्यवस्थाओं तथा लगभग 1.5 लाख कपड़े के थैलों का वितरण करके, यात्रा को अधिक स्वच्छ और पर्यावरण-हितैषी बनाने में मदद मिली। तीर्थयात्रा की शुरूआत आस्था से होती है, लेकिन उसकी वास्तविक भावना तो यात्रा-मार्ग में निःस्वार्थ भाव से की गई सेवा में देखने को मिलती है।

पहाड़ों के गुमनाम नायक

श्री अमरनाथ जी यात्रा के उन दुर्गम क्षेत्रों में जहाँ वाहन नहीं पहुँच पाते, वहाँ खच्चरों ने कचरे को प्रसंस्करण केन्द्रों तक पहुँचाने का काम किया। इन्होंने 14,000 फ़ीट की ऊँचाई पर स्थित एमजी टॉप जैसे दुर्गम पर्वतीय मार्गों पर साफ़-सफ़ाई रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी प्रकार सफ़ाई कर्मियों का योगदान भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहा। मौसम की विषम परिस्थितियों के बावजूद 7,100 से अधिक स्वच्छता कर्मियों ने चौबीसों घंटे अलग-अलग पालियों में काम करते हुए, यात्रा मार्गों की स्वच्छता, सुविधाओं का सुचारु

संचालन और कारगर अपशिष्ट प्रबंधन सुनिश्चित किया। उनके प्रयास भले ही लोगों की नज़रों से ओझल रहे हों, लेकिन वे बाबा बर्फानी की स्वच्छ, सुव्यवस्थित और गरिमापूर्ण यात्रा के आधार स्तम्भ रहे।

समावेशी सेवा

इस वर्ष, यात्रा का स्वच्छता अभियान समावेशी भी रहा। स्थानीय कश्मीरी महिलाओं और स्वच्छता कर्मियों ने, महिला श्रद्धालुओं के लिए विशेष गुलाबी शौचालय और स्नान जैसी सुरक्षित एवं गरिमापूर्ण सुविधाएँ सुनिश्चित

कीं। कुपवाड़ा के शफ़ाक़त हुसैन और जावेद अहमद जैसे दिव्यांगजन भी स्वच्छता कर्मियों की टीम में शामिल हुए। उनके योगदान ने सिद्ध कर दिया कि श्रम की गरिमा और सेवा की भावना हर बाधा से परे है। उनका यह योगदान ऐसे जम्मू और कश्मीर की तस्वीर पेश करता है जहाँ साझा उद्देश्य के लिए हर व्यक्ति सार्थक भूमिका निभा सकता है। मेरा मानना है कि सच्ची सेवा के मूल्यांकन का आधार यही हो सकता है कि उसमें हमारा कितना योगदान रहा।

स्वच्छता, कार्य से बढ़कर सेवा

तीर्थ यात्रा मार्ग केवल बुनियादी ढांचे के बल पर स्वच्छ नहीं रखा जा सकता। वास्तव में कोई भी तीर्थ आपके व्यवहार में परिवर्तन मांगता है।

इसी उद्देश्य से SANJY-2026 में स्वच्छता अभियान का केन्द्र श्रद्धालु रहे। स्वच्छता संकल्प और उत्तरदायी यात्री पहल के माध्यम से, श्रद्धालुओं को हिमालयी पर्यावरण का संरक्षण और संवर्द्धन के प्रति उत्तरदायी रहने को प्रेरित किया गया। 16,000 से अधिक श्रद्धालुओं ने स्वच्छता संकल्प लिया जबकि 10,000 से अधिक श्रद्धालुओं को उत्तरदायी यात्री प्रमाण-पत्र दिए गए।

स्वच्छता एक ऐसी सेवा नहीं रही जिसकी ज़िम्मेदारी केवल प्रशासन की थी। स्वच्छता ने तो सामूहिक ज़िम्मेदारी और आस्था की अभिव्यक्ति का रूप ले लिया। जिस भी श्रद्धालु ने पूरी ज़िम्मेदारी से कचरा निपटान का संकल्प लिया, उसने इस सामूहिक प्रयास में योगदान दिया। हज़ारों श्रद्धालुओं के ऐसे छोटे-छोटे सेवा कार्यों ने, स्वच्छता की स्थायी संस्कृति विकसित करने और पवित्र हिमालय के प्रति सम्मान की भावना मज़बूत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हिमालय की सेवा में नवाचार

श्री अमरनाथ जी यात्रा ने दिखा दिया कि स्वच्छ और सुचारु तीर्थयात्रा के लिए परम्परा और नवाचार एक साथ प्रभावी रूप से कार्य कर सकते हैं। क्यूआर कोड आधारित फ़ीडबैक प्रणाली, रियल-टाइम रिपोर्टिंग ऐप और कृत्रिम मेधा आधारित बहुभाषी मार्गदर्शकों जैसे डिजिटल माध्यमों ने सेवाओं की प्रभावशीलता बढ़ाने के साथ-साथ श्रद्धालुओं की सहभागिता भी बढ़ाई।

यही नहीं, पुनः उपयोग किए जा सकने वाले बर्तनों के बैंक, कचरे से ईंट बनाने की परियोजनाएँ, खच्चरों की लीद से बायोगैस उत्पादन तथा जन-जागरूकता अभियान जैसी टिकाऊ पहल से उत्तरदायी अपशिष्ट प्रबंधन को बढ़ावा मिला। **'गाँधी स्टिक'** से श्रद्धालुओं को कचरे के सीधा सम्पर्क में आए बिना कूड़ा उठाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इन प्रयासों से साबित हुआ कि तकनीक का असली महत्त्व तभी है जब वह लोगों के सहयोग में सहायक हो, प्रकृति का संरक्षण करे और सामूहिक ज़िम्मेदारी की भावना सुदृढ़ करे।

यात्रा से आगे का मॉडल

श्री अमरनाथ जी यात्रा-2026 का अनुभव इस यात्रा से कहीं आगे तक के लिए उपयोगी सीख देता है। इसने सिद्ध कर दिया कि बड़े पैमाने पर होने वाली तीर्थयात्राओं का अग्रिम योजना, वैज्ञानिक विधि से अपशिष्ट प्रबंधन, प्रौद्योगिकी के प्रभावी उपयोग और जनभागीदारी की मदद से सतत एवं पर्यावरण-हितैषी तरीक़े से प्रबंधन किया जा सकता है। हिमालय की चुनौतीपूर्ण भौगोलिक परिस्थितियों में भी स्रोत पर कचरे की छँटनी, संसाधनों की पुनर्प्राप्ति, कचरे से ऊर्जा उत्पादन तथा स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी जैसी पहल के प्रभावी परिणाम सामने आए। भविष्य में हम निगरानी प्रणाली को और मज़बूत करेंगे, टिकाऊ अपशिष्ट प्रबंधन जैसे समाधानों का विस्तार करेंगे तथा सफ़ाई कर्मियों के कल्याण और उनकी कार्य-क्षमता एवं कौशल-विकास को निरंतर बढ़ावा देने के लिए आवश्यक निवेश करते रहेंगे।

'मन की बात' कार्यक्रम में माननीय प्रधानमंत्री से इस सामूहिक प्रयास को मिली सराहना ने, इसे राष्ट्रीय-स्तर पर पहचान दी है। यह न केवल जम्मू और कश्मीर सरकार के लिए बल्कि उन सभी सफ़ाई कर्मियों, प्रशासनिक अधिकारियों, स्वयंसेवियों, स्थानीय निवासियों, सेवा प्रदाताओं और श्रद्धालुओं के लिए भी गौरव का विषय है जिन्होंने यह अभियान सफल बनाने में योगदान दिया।

श्री अमरनाथ जी यात्रा-2026 की वास्तविक सफलता का आकलन केवल इस बात से नहीं किया जा सकता कि कितने कचरे का प्रबंधन हुआ या यात्रा का कितने किलोमीटर मार्ग स्वच्छ रखा गया। इसकी सच्ची कसौटी तो यह होगी कि हम हिमालय को जैसा पाएँ, उससे बेहतर स्थिति में छोड़कर जाएँ। यात्रा की सफलता इसी में निहित है कि बाबा बर्फानी के प्रत्येक भक्त के मन में यह भावना और अधिक दृढ़ हो कि आस्था और उत्तरदायित्व एक-दूसरे से जुड़े हैं तथा माँ प्रकृति की रक्षा करना पवित्र तीर्थ यात्रा का अभिन्न अंग है।

स्वच्छता का जज़्बा

पटवाई की सामुदायिक कहानी

प्रधानमंत्री ने अपने 'मन की बात' के 137वें संस्करण में उत्तर प्रदेश के रामपुर जिले के पटवाई गाँव का उल्लेख किया, जहाँ दो दोस्तों ने गंगा घाट पर फैली गंदगी को देखकर अपनी नाराजगी और हताशा को स्वच्छता अभियान में बदल दिया। आकाश यादव कहते हैं, ***"घाट हमारे गाँव की शान है, लेकिन वह गंदा था। केवल तस्वीरें खींचने और शिकायत करने से कुछ नहीं होता। हमें खुद ही इसकी सफाई करनी होगी।"***

रोहन देव
पटवाई, यूपी

आकाश और रोहन की कचरा उठाने की शुरुआत ने जल्दी ही एक बड़े अभियान का रूप ले लिया। आकाश बताते हैं, *"पहले लोग हम पर हँसते थे, लेकिन जब हमने इंस्टाग्राम पर कुछ वीडियो डाले तो हमारे साथ और दोस्त जुड़ने लगे। आज हमारे साथ 15 से अधिक युवा हैं।"* **'क्लीन-अप पटवाई'** नाम से काम कर रही इस टीम ने अब तक गंगा के चार घाटों की सफाई की है और एक टन से अधिक प्लास्टिक कचरा हटाया है।

आकाश, पटवाई, यूपी

आकाश के अनुसार, असली चुनौती पैसे या लोगों की कमी नहीं, बल्कि लोगों की सोच बदलना है। वह कहते हैं, ***"सबसे मुश्किल काम लोगों की मानसिकता बदलना है।*** *लोग तालियाँ तो बजाते हैं, प्रशंसा भी करते हैं, लेकिन अगले ही दिन वही कचरा फिर फेंक देते हैं। फिर भी 'मन की बात' में उनके गाँव का उल्लेख होने से माहौल बदला है। पूरा पटवाई खुश था। अब हर किसी को इस बात पर गर्व महसूस होता है।"*

उनका संदेश साफ है, "सरकार का इंतजार मत कीजिए। एक बोरी कचरा उठाइए, एक नाली साफ कीजिए।"

प्रकृति, उद्यम और सशक्तीकरण

बदलाव की राह दिखाती महिलाओं की कहानियाँ

जब महिलाएँ अपनी रुचि, कौशल और स्थानीय संसाधनों को आजीविका और सामुदायिक विकास के अवसरों में बदलती हैं, तो यह पूरे देश के लिए गर्व की बात होती है। उनकी यह यात्रा सशक्तीकरण का रास्ता बनाती है। नागालैंड के फेक जिले की वेसालु पुरो और ओडिशा के देबरीगढ़ क्षेत्र की मैथिली भुए की कहानी, जिनका जिक्र माननीय प्रधानमंत्री ने भी किया है, ऐसी ही दो यात्राओं को दर्शाती है। एक तरफ जहाँ वेसालु ने फूलों के प्रति अपने जुनून को फूलों की खेती के उद्यम में बदला है, वहीं मैथिली ने वन संरक्षण और इको-टूरिज्म (पारिस्थितिक पर्यटन) के जरिए सम्मान और आर्थिक आजादी पाई है। उनके अनुभवों से पता चलता है कि कैसे व्यक्तिगत पहल बड़े पैमाने पर समुदाय की भागीदारी को प्रेरित कर सकती है और उसमें योगदान दे सकती है।

वेसालु पुरो

फूलों की खेती से उद्यम तक

खेती हमेशा से ही वेसालु पुरो के जीवन का हिस्सा रही है। एक किसान परिवार में पली-बढ़ी होने के कारण फूलों से गहरा लगाव होना स्वाभाविक ही था। और इसी लगाव ने उन्हें

जुलाई 2021 में फूलों की खेती शुरू करने के लिए प्रेरित किया। शादियों और त्योहारों के दौरान फूलों की लगातार मांग को देखते हुए, वेसालु ने व्यावसायिक खेती करने का निर्णय किया। कृषि विज्ञान केंद्र (KVK), फेक से मिले प्रशिक्षण ने उन्हें वैज्ञानिक तरीके सीखने में मदद की। इसमें मिट्टी तैयार करने से लेकर फसल प्रबंधन और खेती के बेहतर तरीकों के बारे में जानकारी शामिल थी। काउंसिल ऑफ़ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च–नॉर्थ ईस्ट इंस्टीट्यूट ऑफ़ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, जोरहाट से सीएसआईआर फ्लोरीकल्चर मिशन के तहत मिली मदद ने उन्हें पॉलीहाउस के जरिए संरक्षित खेती अपनाने में भी सक्षम बनाया। प्रशिक्षण से प्राप्त अनुभव के बारे में बताते हुए वह कहती हैं, "इन अनुभवों ने मुझे पारम्परिक खेती के ज्ञान को आधुनिक तकनीकों के साथ जोड़ने में मदद की।"

ग्लैडियोलस फूल की खेती का उनका शुरुआती अनुभव उत्साहजनक रहा। उन्होंने एक–चौथाई एकड़ भूमि पर हजारों कंद लगाए और पहली ही कोशिश में 5,000 से अधिक फूल खिलते देखे। अपनी पहली फसल के महत्त्व को याद करते हुए वेसालु कहती हैं, "पहली बार फूलों को खिलते देखना और पूरी फसल को सफलतापूर्वक बेच पाना मेरे लिए बहुत उत्साहजनक था। इससे मेरा विश्वास बढ़ा कि फूलों की खेती आजीविका का एक अच्छा साधन बन सकती है। इसी अनुभव ने मुझे फूलों की अन्य किस्मों को आजमाने के लिए प्रेरित किया।"

हालांकि, वेसालु की यात्रा आसान नहीं थी। उन्हें बहुत सारी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। मौसम की स्थिति, भारी बारिश, परिवहन, बुनियादी ढाँचा और बाज़ार तक फूल पहुँचाने से जुड़ी समस्याओं ने मुश्किलें खड़ी कीं। उन्होंने केवीके फेक और सीएसआईआर–एनईआईएसटी से मिले मार्गदर्शन से लगातार सीखने, प्रयोग करने और परिस्थितियों के अनुसार ढलने के द्वारा इन चुनौतियों का सामना किया।

उनके फूल, जो पहले मुख्य रूप से स्थानीय बाजारों में बिकते थे, धीरे–

मैथिली भुए

धीरे शहरों तक पहुँचने लगे। इस बदलाव के बारे में बताते हुए वह कहती हैं, "यह रोमांचक तो रहा है, लेकिन चुनौतीपूर्ण भी। तोड़े गए फूल नाजुक होते हैं और जल्दी खराब हो जाते हैं, और पहाड़ी इलाके से इन्हें भेजना मुश्किल हो सकता है। सोशल मीडिया, ग्राहक नेटवर्क और एक से दूसरे तक बात पहुँचाने के माध्यम से, मेरे फूल धीरे-धीरे नागालैंड के बाहर दिल्ली और मुंबई जैसे बाजारों तक पहुँचने लगे हैं।" वेसालु का मानना है कि फूलों की खेती महिलाओं और किसान परिवारों के लिए अपनी आमदनी बढ़ाने का एक अच्छा जरिया है। वह कहती हैं, "सही प्रशिक्षण, तकनीक और बाजार तक पहुँच मिलने पर, इससे नागालैंड में रोज़गार के अच्छे अवसर पैदा हो सकते हैं।" उनका सफर दिखाता है कि एक निजी दिलचस्पी को जब तकनीकी मार्गदर्शन और जानकारी का साथ मिलता है, तो कैसे वह एक अच्छे व्यवसाय में बदल सकती है।

वन पर निर्भरता से संरक्षण आधारित आजीविका की ओर

ओडिशा के देबरीगढ़ इलाके में धोड्रोकुसुम गाँव की मैथिली भुए महिलाओं के सशक्तीकरण की एक और मिसाल पेश करती हैं। पहले वह अपने परिवार की जरूरतें पूरी करने के लिए जलाऊ लकड़ी, महुआ के फूल, केंदू के पत्ते, बाँस के कोंपल और जंगल से मिलने वाली दूसरी वस्तुएँ इकट्ठा करने के लिए नियमित रूप से जंगल जाती थीं। 2023 में सम्भागीय वन अधिकारी सहित देबरीगढ़ के अधिकारियों से प्रेरित होकर वह एक कर्मचारी के तौर पर देबरीगढ़ इको-टूरिज्म से जुड़ीं। अपने इस बदलाव के बारे में बताते हुए मैथिली कहती हैं, "देबरीगढ़ में शामिल होने के बाद से मैं ज़ीरोपॉइंट रेस्टोरेंट सम्भालती हूँ और देबरीगढ़ इको-टूरिज्म और संरक्षण के कामों से जुड़ने वाली दूसरी महिलाओं को प्रशिक्षण देती हूँ।"

उनकी इस नई भूमिका से जंगल के साथ उनके रिश्ते में एक बड़ा बदलाव आया। इस बदलाव पर बात करते हुए वह कहती हैं, "अब जंगल के साथ मेरा रिश्ता सकारात्मक है। पहले मैं जंगल में सिर्फ जंगल की उपज इकट्ठा करने जाती थी और वन विभाग के साथ मेरा रिश्ता अक्सर जंगल में जाने और पाबंदियों को लेकर होने वाले टकराव का था। अब वही जंगल मुझे साल भर आमदनी दे रहा है और मेरे लिए सम्मान के साथ अपनी आजीविका कमाने का माध्यम बन गया है।"

शुरुआत में कुछ ग्रामीणों और महिला साथियों ने वन विभाग के साथ उनके जुड़ने पर सवाल उठाए। हालांकि, उनके लगातार काम और साल भर होने वाली आमदनी ने धीरे-धीरे उनकी सोच बदल दी। इस अनुभव को याद करते हुए वह कहती हैं, "लेकिन धीरे-धीरे जब उन्होंने मुझे रोज काम पर जाते और साल भर अपनी आजीविका कमाते देखा, तो वे भी इको-टूरिज्म और उससे जुड़ी दूसरी गतिविधियों में शामिल होने लगीं।"

आज देबरीगढ़ इलाके में 60 से ज्यादा महिलाएँ जंगल बचाने के कामों में शामिल हैं। उनके योगदान में जंगली जानवरों की सुरक्षा, घास के मैदानों का विकास और इको-टूरिज्म शामिल है।

प्रकृति के साथ मिलकर विकास की ओर

वेसालु पुरो और मैथिली भुए की कहानियाँ दर्शाती हैं कि कैसे पक्के इरादे, जानकारी और संस्थागत मदद से स्थानीय मौकों को बेहतर आजीविका में बदला जा सकता है। एक तरफ जहाँ वेसालु ने फूलों के प्रति अपने जुनून को एक बढ़ते हुए कारोबार में बदल दिया है, वहीं मैथिली ने जंगल बचाने और इको-टूरिज्म के जरिए सम्मान और आर्थिक आजादी पाई है। उनके अनुभव बताते हैं कि महिलाओं की भागीदारी न सिर्फ उनके और उनके परिवार की भलाई में, बल्कि बड़े पैमाने पर समुदाय के विकास और पर्यावरण की सुरक्षा में भी योगदान दे सकती है। नागालैंड के फूलों के खेतों से लेकर ओडिशा के जंगलों तक ये महिलाएँ महिला सशक्तीकरण की मिसाल हैं। ये दिखाती हैं कि अगर लगन हो तो कैसे एक छोटी शुरुआत के साथ जब सामूहिक भागीदारी का साथ मिले, तो लम्बे समय तक चलने वाले बदलाव की प्रेरणा बन सकती है।

डॉ. श्रीमति केसन
संस्थापक एवं सीईओ
स्पेस किड्स इंडिया
मिशन निदेशक, मिशन 'शक्तिसैट'

वैश्विक शांति एवं बालिका शक्ति के लिए

मिशन 'शक्तिसैट'

मिशन 'शक्तिसैट' (ShakthiSAT) की परिकल्पना इस विश्वास के साथ हुई थी कि अंतरिक्ष अन्वेषण समावेशी, सहयोगात्मक और समस्त विश्व के युवाओं को सुलभ होना चाहिए। मेरे लिए सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह कभी नहीं रहा कि हम कितने उपग्रह बना सकते हैं, बल्कि यह रहा कि हम कितनी युवा बालिकाओं में यह विश्वास पैदा कर सकते हैं कि वे भी वैज्ञानिक, इंजीनियर, शोधकर्ता, नवोन्मेषक और ऐसी नेत्रियाँ बन सकती हैं जो अंतरिक्ष में मानवता के भविष्य को आकार दे सकती हैं। उपग्रह तो इस मिशन की एक उपलब्धि है, इसका बड़ा उद्देश्य तो बालिकाओं के जीवन में बदलाव लाना है। मिशन शक्तिसैट केवल एक उपग्रह मिशन नहीं है, यह तो एक आंदोलन है।

इसकी मूल भावना "सबका साथ, सबका विकास" में निहित है– मिलजुल कर निर्माण करना, बदलाव लाना और आगे बढ़ना। भारत के ग्रामीण इलाकों की 750 बालिकाओं द्वारा निर्मित 'आज़ादीसैट' (AzaadiSAT) की सफलता के बाद हमने महसूस किया कि दुनिया भर की बालिकाओं को एक ही तरह की चुनौतियों और बाधाओं का सामना करना पड़ता है। इसलिए हमने ऐसा मंच तैयार किया जहाँ दुनिया के दूरदराज इलाकों में रहने वाली बालिकाएँ भी अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी सीख कर अपनी क्षमताएँ और सम्भावनाएँ पहचान सकें।

यह मिशन 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात् 'समस्त विश्व एक परिवार है,' की भावना से भी प्रेरित है। इसी भारतीय दर्शन को व्यवहार में लाने के प्रयास में मिशन 'शक्तिसैट' एक शांतिपूर्ण अंतरिक्ष अभियान के माध्यम से 108 देशों की बालिकाओं को एक साथ लेकर आया। संख्या 108 का विशिष्ट खगोलीय और सांस्कृतिक महत्त्व भी है। परम्परागत रूप से इसे पृथ्वी, सूर्य और चंद्रमा के बीच के कुछ अनुमानित सम्बंधों से जोड़ा जाता है। मूल रूप से, मिशन 'शक्तिसैट' का उद्देश्य अंतरिक्ष विज्ञान, इंजीनियरिंग और तकनीकी नेतृत्व सहित अंतरिक्ष क्षेत्र में महिलाओं के सशक्तीकरण को बढ़ावा देना है।

हमारी यात्रा

इस यात्रा की शुरुआत 108 देशों की पहचान करने और 108 महिला नेत्रियों का नेटवर्क तैयार करने से हुई। यह नेत्रियाँ अपने-अपने देशों के लिए मिशन की दूत या 'देवी' बनीं। युवा प्रतिभागियों को 'शक्ति' नाम से सम्बोधित किया गया जो अपने-अपने देशों की प्रतिनिधि और विज्ञान के माध्यम से एकजुट वैश्विक समुदाय की सदस्य थीं। इस अभियान का विस्तार छह महाद्वीपों तक रहा। इसमें ग्रेनाडा, बहामास, सेंट किट्स और नेविस, लेसोथो और इस्वातिनी जैसे वे देश भी शामिल थे जिनका अंतरिक्ष सम्बंधी प्रमुख पहल में प्रतिनिधित्व अपेक्षाकृत कम ही रहा है।

21 मॉड्यूल और 550 व्यावहारिक गतिविधियों के साथ एक व्यापक शैक्षिक आधार तैयार किया गया जिसमें भारत और अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के शिक्षाविदों तथा प्रोफेसरों का योगदान रहा। पाठ्यक्रम की तकनीकी समीक्षा इसरो के वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने की और इसे 'आईएन-स्पेस' (IN-SPACe) से मान्यता मिली। इसे ज़ोहो लर्निंग प्लेटफॉर्म के माध्यम से अंग्रेज़ी, फ्रेंच, स्पेनिश और पुर्तगाली भाषाओं में निःशुल्क उपलब्ध कराया गया।

छात्राओं ने उपग्रह प्रणालियों, अंतरिक्ष यान प्रौद्योगिकी, पेलोड, संचार और मिशन योजना के बारे में सीखा। हर एक प्रतिभागी देश से एक 'शक्ति' को, भारत में गहन प्रशिक्षण और व्यावहारिक अनुभव के लिए चुना गया। चुनी हुई 'शक्तियाँ' और 'देवियाँ' तकनीकी प्रशिक्षण, नेतृत्व विकास, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के लिए 22 से 31, अगस्त तक ग्रेटर नोएडा स्थित गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय में एकत्र हुईं। भारत की ओर से विविध पृष्ठभूमि वाली 20 बालिकाओं ने भाग लिया जिनमें बढ़ई की बेटी से लेकर घरेलू सहायिका की बेटी तक शामिल थीं। इससे सिद्ध होता है कि अवसर मिले तो प्रतिभा कहीं भी मिल सकती है।

45 घंटे के गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत छात्राओं को इसरो और 'आईएन-स्पेस' (IN-SPACe) के वैज्ञानिकों के साथ बातचीत के माध्यम से अंतरिक्ष यान के विकास की प्रक्रिया से परिचित कराया गया। उन्होंने निम्न पृथ्वी कक्षा (Low Earth Orbit) उपग्रह के इंजीनियरिंग मॉडल के साथ काम किया और पेलोड एकीकरण का अनुभव प्राप्त किया। छठे दिन तक उन्होंने चंद्रमा के लिए प्रस्तावित

उपग्रह की बनावट का ढाँचा तैयार कर लिया।

लेकिन मिशन 'शक्तिसैट' का असली प्रभाव तो इन आँकड़ों के पीछे छिपी जिंदगियों में दिखाई देता है। इथियोपिया की गेलिला को अपने चयन की ख़बर तब मिली जब वो अपने पिता के निधन के कारण गहरे सदमें में थी। उनके पिता उनका सबसे बड़े सहारा थे। अपने गहरे दुःख और घर पर ही रुके रहने की इच्छा के बावजूद उन्होंने भारत आने का निर्णय लिया, क्योंकि वह पिता के उस विश्वास का सम्मान करना चाहती थीं, जो उन्हें अपनी बेटी पर था। आज वह अपने प्रशिक्षण का उपयोग, अपने देश में अंतरिक्ष और गहन प्रौद्योगिकी शिक्षार्थियों का समुदाय बनाने और उसका नेतृत्व करने में कर रही हैं।

बेनिन में एक विशाल परिवार की 24वीं संतान, 15 वर्षीय बालिका ने उन्नत अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की अवधारणाओं को कुशाग्रता से समझकर सारी आशंकाओं को पछाड़ दिया। बाद में उन्होंने सीधे अपने देश के राष्ट्रपति के समक्ष एक विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें गहन प्रौद्योगिकी और अंतरिक्ष क्षेत्र में युवा महिलाओं की अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने का अनुरोध किया गया।

भूटान और म्यांमार के दूरदराज़ के गाँवों से आई बालिकाओं के लिए यह मिशन अपने गाँव से बाहर की दुनिया की पहली यात्रा थी। उन्होंने एक अंतरराष्ट्रीय मंच पर कदम रखा, दुनिया भर से आई अपनी साथियों के संग प्रशिक्षण लिया और वैज्ञानिक ज्ञान तथा अपने समुदायों के लिए एक नई सोच लेकर घर लौटीं।

यह तो 108 कहानियों में से केवल कुछ हैं। हर बालिका अपने साथ एक अलग संघर्ष, एक अलग सपना और

सफलता की एक अलग परिभाषा लेकर आई थी। फिर भी सभी ने मिलकर इस अवसर का कई गुणा अधिक प्रभाव दिखाया।

यह यात्रा दो वर्ष की कठिन साधना थी और निश्चित रूप से कह सकती हूँ कि यह आसान नहीं थी। 108 देशों के बीच एक पहल का समन्वय करने में भाषा, भौगोलिक परिस्थितियों, भिन्न समय क्षेत्रों, शैक्षिक बुनियादी ढाँचे, तकनीकी क्षमताओं और वित्तीय संसाधनों सम्बंधी अनेक चुनौतियाँ सामने आईं। अंतरराष्ट्रीय पेलोड को भी एक साझा अंतरिक्ष यान संरचना के अनुरूप संचालित करना था, जिसके लिए मानकीकरण, दस्तावेज़ीकरण, परीक्षण, एकीकरण और गुणवत्ता आश्वासन जैसी प्रक्रियाओं का पालन आवश्यक था। फिर भी, इसका उद्देश्य केवल तकनीकी ज्ञान से कहीं आगे तक का है।

मेरे लिए, मिशन 'शक्तिसैट' की सबसे बड़ी उपलब्धि केवल वह अंतरिक्ष यान नहीं होगी जिसे हम बनाएँगे या वह दूरी नहीं होगी जिसे हम तय करेंगे। इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि वह बालिका होगी जो अपने समुदाय में लौटकर किसी दूसरी बालिका को सपने देखने के लिए प्रेरित करेगी।

भारत ने तो नालंदा की विरासत से लेकर अंतरिक्ष के क्षेत्र में अपनी उपलब्धियों तक, हमेशा अपने ज्ञान को व्यापक मानवीय उद्देश्य से जोड़ा है। मिशन 'शक्तिसैट' इसी भावना को आगे बढ़ा रहा है।

मैं माननीय प्रधानमंत्री की हृदय से आभारी हूँ कि उन्होंने मिशन 'शक्तिसैट' को मान्यता दी और इन युवा बेटियों को राष्ट्र के समक्ष अपने सपनों को प्रकट करने का अवसर दिया। मैं सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय का भी हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ कि उसने हमें 'मन की बात' पुस्तिका के माध्यम से यह कहानी साझा करने का अवसर दिया। जब बेटियों को शिक्षा, अवसर और सपने देखने का आत्मविश्वास मिलता है, तो वे न केवल अपना जीवन बदलती हैं अपितु अपने परिवार, समुदाय और राष्ट्र को भी बदल देती हैं। इस पीढ़ी के प्रति मिशन 'शक्तिसैट' हमारा एक संकल्प है जो उन्हें सपने देखने के लिए ज्ञान, निर्माण के लिए अवसर, नेतृत्व के लिए साहस और उड़ान भरने के लिए पंख देता है।

एवोकाडो से कृषि समृद्धि तक

किसानों की आय का नया विकल्प

कुछ समय पहले तक भारत में जिस फल का नाम शायद ही किसी ने सुना हो, आज वह फल देश के प्रीमियम मार्केट और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक लोगों की पहली पसंद बन चुका है। हम बात कर रहे हैं 'एवोकाडो' की, जिसे 'बटर फ्रूट' के नाम से भी जाना जाता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी हाल ही में 'मन की बात' कार्यक्रम में इस बात का ज़िक्र किया कि कैसे यह फल अब हमारे देश के प्रगतिशील किसानों के लिए एक बेहतरीन व्यावसायिक फसल बन रहा है। दक्षिण भारत के किसान अपनी पारम्परिक खेती के साथ एवोकाडो उगाकर न केवल अपनी आमदनी बढ़ा रहे हैं, बल्कि कृषि विविधीकरण का एक बेहतरीन उदाहरण भी पेश कर रहे हैं।

निराशा से नवाचार की ओरः आंध्र प्रदेश के वरदराज रेड्डी

आंध्र प्रदेश के कडपा ज़िले के किसान वरदराज रेड्डी की कहानी इस बात का प्रमाण है कि खेती में सही समय पर किया गया बदलाव कैसे किसानों की क़िस्मत बदल सकता है। केले और टमाटर जैसी पारम्परिक फसलों में होने वाले नुक़सान और अनिश्चितता ने उन्हें कुछ नया सोचने पर मजबूर कर दिया। अपनी निराशा और एवोकाडो को चुनने

वरदराज रेड्डी

के फैसले को याद करते हुए वरदराज जी बताते हैं:

"मैं पिछले 15 वर्षों से खेती कर रहा हूँ। पहले हम केले, मौसम्बी और टमाटर उगाते थे, लेकिन अक्सर एक साल मुनाफे के बाद दो साल का नुक़सान होता था। मेरी आमदनी परिवार की जरूरतें और निवेश निकालने के लिए भी मुश्किल से पूरी होती थी। लगातार फसल ख़राब होने से मैं इतनी निराशा में चला गया था कि खेती छोड़कर कोई नया काम शुरू करने के बारे में सोच रहा था। तभी मुझे लगा कि लोगों को पौष्टिक भोजन देना चाहिए। कोविड महामारी के बाद लोग अपनी डाइट को लेकर काफ़ी जागरूक हो गए थे, इसलिए मैंने प्रोटीन से भरपूर एवोकाडो उगाने का फैसला किया।"

वरदराज ने बेंगलुरु स्थित भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान (IIHR) से जानकारी जुटाई और अपने खेत में 300 पौधे लगाए। ड्रिप इरिगेशन और जैविक तरीक़ों के इस्तेमाल से इस साल उन्होंने 4 टन फसल का उत्पादन किया है। वह कहते हैं:

"फसल आने से पहले मुझे बाजार की चिंता थी, लेकिन अब हालात बहुत अच्छे हैं। फल के आकार के हिसाब से मुझे 90 से 120 रुपये प्रति किलो का भाव मिल रहा है। इस फसल में रखरखाव का ख़र्च बहुत कम है। जो किसान इसकी

खेती करना चाहते हैं, वे जरूर करें, बस अपनी मिट्टी और जलवायु को पहले अच्छी तरह समझ लें।"

कॉफ़ी बागानों में नया विकल्पः कर्नाटक के अभिजीत पई

कर्नाटक के चिकमगलूर में कॉफ़ी की खेती काफ़ी मशहूर है। लेकिन वहाँ के किसान भी जलवायु परिवर्तन और जंगली जानवरों की समस्या से जूझ रहे हैं। ऐसे में कॉफ़ी प्लांटर अभिजीत पई ने अपनी कॉफ़ी की फसल के बीच 'इंटरक्रॉप' के रूप में एवोकाडो की खेती शुरू की है। अभिजीत इस नए विकल्प के फ़ायदे बताते हुए कहते हैं:

"हाल के दिनों में जलवायु परिवर्तन और मौसम में बदलाव के कारण पारम्परिक फलों का उत्पादन ठीक से नहीं हो पा रहा था। बंदर जैसे जंगली जानवरों के कारण भी काफ़ी फल बर्बाद हो जाते हैं। ऐसे में हमने बटर फ्रूट को

अभिजीत पई

व्यावसायिक फसल के रूप में आजमाया है। इसकी शेल्फ लाइफ भी काफी अच्छी है। फल तोड़ने के बाद इसे 10 से 15 दिनों तक बाजार में आसानी से रखा जा सकता है।" वह आगे बताते हैं:

"हम इसे अपने कॉफ़ी बागान में इंटरक्रॉप के तौर पर उगा रहे हैं। यह हमारी मुख्य फसल को छाया भी देता

है और साथ ही हमारे लिए अतिरिक्त आय का बेहतरीन माध्यम भी बन रहा है। फ़िलहाल हम अपने फल स्थानीय व्यापारियों को दे रहे हैं, लेकिन अगर बड़े स्तर पर इसकी व्यावसायिक खेती की जाए तो इसके बहुत अच्छे परिणाम सामने आएँगे।"

सही मार्गदर्शन और बढ़ती आयः तमिलनाडु के पी. चंद्रशेखरन

तमिलनाडु के कोडाइकनाल में पी. चंद्रशेखरन जी ने मात्र आधी हेक्टेयर ज़मीन पर एवोकाडो उगाना शुरू किया और वैज्ञानिक तरीक़े से खेती करके अपनी आय में काफ़ी इज़ाफा किया है। सही मार्गदर्शन और बीमारियों के प्रबंधन के बारे में बताते हुए वह कहते हैंः

"शुरुआत में रूट रॉट (Root rot) और डाइबेक (Dieback) जैसी बीमारियों का सामना करना पड़ा। भारी बारिश में मिट्टी की नमी बढ़ने से ये बीमारियाँ बढ़ जाती थीं। लेकिन हॉर्टिकल्चर तकनीक और वैज्ञानिक सलाह से मैंने पौधों की छंटाई और बीमारी प्रबंधन सीखा। मैंने यह भी जाना कि एवोकाडो में विटामिन के, पोटैशियम और अच्छा कोलेस्ट्रॉल होता है, जिसकी बाजार में बहुत मांग है।"

बाज़ार के रुझान और आय में वृद्धि पर पी. चंद्रशेखरन कहते हैंः

"अगस्त से दिसम्बर तक एवोकाडो की उपज सबसे अच्छी होती है। शुरुआती महीनों में यह 80 से 100 रुपये प्रति किलो

पी. चंद्रशेखरन

बिकता है, लेकिन बाद में इसकी क़ीमत 150 रुपये प्रति किलो तक पहुँच जाती है। इस खेती से होने वाली कमाई हमारे परिवार के ख़र्चे, बच्चों की पढ़ाई और बुजुर्गों के इलाज में बहुत मदद कर रही है।"

शहरों के रेस्टोरेंट में बिकने वाला महँगा 'एवोकाडो टोस्ट' अब केवल शहरी लाइफस्टाइल का हिस्सा नहीं रह गया है। दक्षिण भारत के नवोन्मेषी किसानों ने इसे अपनी कमाई की एक नई 'रेसिपी' बना लिया है। वैज्ञानिक सलाह, सीधे बाज़ार से जुड़ाव और बदलती उपभोक्ता माँग को समझकर ये किसान न केवल खेती में विविधीकरण ला रहे हैं, बल्कि कृषि क्षेत्र में समृद्धि की एक नई मिसाल भी पेश कर रहे हैं।

देबाशीष सेन शर्मा
प्रोफ़ेसर एवं विभागाध्यक्ष, लेखन विभाग
एसआरएफ़टीआई

उत्तम कुमार

बांग्ला सिनेमा के कालजयी नायक

"मैं शिखर पर पहुँचूँगा, शिखर पर, शिखर पर!"

उत्तम कुमार ने यह यादगार संवाद सत्यजीत राय की सदाबहार फिल्म 'नायक' (1966) में अरिंदम चटर्जी का चरित्र निभाते हुए बोला था। सिनेमा की इस अनूठी कथा में वास्तविक जीवन और पर्दे का किरदार एक दूसरे में यूँ घुल-मिल जाते हैं कि यथार्थ और कल्पना के बीच की सीमाएँ लगभग मिट जाती हैं। उत्तम कुमार न केवल उस 'शिखर' तक पहुँचे जो उन्होंने अरिंदम चटर्जी का अभिनय करते हुए बोला था, बल्कि स्वयं भी लोकप्रियता के ऐसे शिखर पर पहुँचे, जहाँ उनका नाम बंगाल के लगभग हर घर की पहचान और भावनाओं का अभिन्न हिस्सा बन गया। उन्हें मिली असाधारण लोकप्रियता उनके जीवनकाल तक सीमित नहीं रही। उनके निधन के चार दशक बाद भी उनके प्रति लोगों का स्नेह और सम्मान पूर्ववत बना हुआ है। उत्तम कुमार के देहांत (24 जुलाई, 1980) पर समूचा बंगाल शोकाकुल था। विशेष रूप से कोलकाता में लोगों की भारी भीड़ सड़कों पर उमड़ पड़ी। सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था चरमरा गई, दुकानें बंद हो गईं। अस्पताल के बाहर और सड़कों के किनारे हज़ारों लोग जमा हो गए। लोग, बंगाल के अपने सबसे चहेते अभिनेता के निधन की वास्तविकता स्वीकार नहीं कर पा रहे थे। उस दिन बंगाल ने केवल एक अभिनेता नहीं खोया था; उसने अपनी सामूहिक स्मृति और पहचान का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा खो दिया था।

1926 में अरुण कुमार चट्टोपाध्याय के रूप में जन्मे उत्तम कुमार का बांग्ला फिल्म जगत में महानायक के रूप में लोकप्रियता का शिखर छूना आसान नहीं था। अभिनय के प्रारम्भिक वर्षों में उन्हें विफलता, आर्थिक अनिश्चितता और निरंतर निराशा का सामना करना पड़ा था। उनकी शुरुआती कई

फिल्में सफल नहीं रहीं। फिल्म उद्योग में जहाँ पहचान बनाना ही बड़ी चुनौती होता है, वहाँ उन्हें अपनी जगह बनाने के लिए ही निरंतर संघर्ष करना पड़ा। लेकिन इन विफलताओं ने उनका संकल्प कमज़ोर करने के बजाय और मज़बूत ही किया। वे लगातार काम करते रहे, अभिनय की बारीकियाँ समझते हुए निरंतर अपना कौशल निखारते रहे। अंततः उनकी लगन रंग लाई।

1953 में सुचित्रा सेन के साथ आई फिल्म 'साढ़े चौहत्तर' उनके जीवन का निर्णायक मोड़ साबित हुई। फिल्म की सफलता ने दोनों कलाकारों की अभिनय यात्रा को नई दिशा दी और दोनों बांग्ला सिनेमा की सबसे लोकप्रिय और सफल जोड़ियों में से एक बन गए। इस जोड़ी ने पर्दे पर प्रेम की अभिव्यक्ति की एक ऐसी विशिष्ट शैली को जन्म दिया, जिसे दर्शकों ने पूरी आत्मीयता से अपना लिया।

फिल्म विश्लेषकों के अनुसार, उत्तम कुमार के रूप में उभरी इस अद्भुत 'घटना' को उस समय के बंगाल की सामाजिक परिस्थितियों के संदर्भ में समझा जाना चाहिए। यह विभाजन के बाद का बंगाल था, जो विस्थापन, आर्थिक कठिनाइयों और पहचान के संकट से जूझ रहा था। ऐसे माहौल में दर्शकों को उत्तम कुमार की फिल्मों में भावनात्मक सम्बल मिला। उनकी फिल्मों में उन्हें एक ऐसी दुनिया मिली जो सिनेमा हॉल से बाहर की कटु सच्चाई से एकदम विपरीत सौम्यता, स्थिरता और प्रेम की आशा लिए थी। उत्तम कुमार में लोगों को कभी पड़ोस का परिचित युवक, तो कभी आदर्श भाई, मित्र और प्रेमी नज़र आने लगा। उनकी मधुर और प्रभावशाली आवाज़, सहज दृष्टि और मुस्कान ने उन्हें करिश्माई व्यक्तित्व और व्यापक लोकप्रियता अर्जित करने में योगदान दिया। वे एक ऐसा मिश्रित व्यक्तित्व थे जो पास होकर भी दूर प्रतीत होता था, एक ऐसा व्यक्ति जो आत्मीयता और भावनाओं की दृष्टि से अत्यंत निकट किंतु फिर भी पहुँच से दूर महसूस होता था।

उनकी बहुमुखी प्रतिभा उनके निभाए विभिन्न किरदारों में देखी जा

सकती है। रोमांटिक हीरो के रूप में *सप्तपदी* और *हरानो सुर* में उनकी कोमलता और जुनून से लेकर *नायक* में अंतर्विरोधों से जूझते एक सफल फिल्म सितारे तक; *चिड़ियाखाना* और *जतुगृहो* में गम्भीर तथा नैतिक रूप से जटिल भूमिकाओं से लेकर *एंटनी फिरंगी* में एक ऐतिहासिक चरित्र तक उनके अभिनय का दायरा, आदर्शवादी प्रेमियों और पारिवारिक पुरुषों से लेकर कमियों से ग्रस्त, आत्मविश्लेषी तथा मनोवैज्ञानिक रूप से जटिल व्यक्तित्व तक फैला रहा। यही उनकी असाधारण अभिनय-क्षमता और दर्शकों के बीच लम्बे समय तक लोकप्रियता का कारण बना।

'नायक' में उनका सत्यजीत राय के साथ काम करना विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण था। फिल्म के एक यादगार संवाद में अरिंदम अपनी कामयाबी पर दृष्टिपात करते हुए कहता है: "मैं एक अभिनेता हूँ। मैं अभिनय करता हूँ।" संदर्भ में देखें तो यह कथन कहीं गहरा अर्थ लिए है। इस भूमिका में एक विडम्बनापूर्ण आत्मकथात्मक झलक मिलती है। कहते हैं कि सत्यजीत राय ने 'नायक' बनाने की शर्त रखी थी कि मुख्य भूमिका केवल उत्तम कुमार ही निभाएँगे, जबकि उनके पसंदीदा अभिनेता सौमित्र चटर्जी थे। बर्लिन फिल्म महोत्सव में इस फिल्म को विशेष पहचान मिली और दर्शकों ने खड़े होकर उत्तम कुमार के उत्कृष्ट अभिनय की करतल ध्वनि से सराहना की। उनके निधन के बाद सत्यजीत राय ने उनके लिए जो बात कही थी वो आज भी उनके लाखों प्रशंसकों के मन में गूँजती है: *"उन जैसा कोई दूसरा नायक न है और न होगा।"*

बांग्ला फिल्म उद्योग में उनका योगदान केवल अभिनय तक सीमित नहीं था। दशकों तक यह उद्योग उनके स्टारडम और लोकप्रियता पर टिका रहा। किसी भी निर्माता के लिए

अपनी फ़िल्म में उत्तम कुमार को लेना, लगाए गए पैसे की न्यूनतम वापसी की लगभग गारंटी माना जाता था। वे एक सच्चे उद्धारक और सभी तकनीशियनों के लिए 'गुरु' समान थे। अनगिनत तकनीशियनों को उनसे विभिन्न तरीकों से लाभ मिला। उन्होंने ग़रीब कलाकारों और तकनीशियनों की मदद के लिए 'शिल्पी संसद' नामक एक फिल्म संस्था गठित की। इसके अलावा, तकनीशियनों को समय पर और उचित पारिश्रमिक सुनिश्चित करने के लिए उन्होंने अपनी कई फिल्मों में बिना पारिश्रमिक लिए भी काम किया। अपनी परोपकारी और सामाजिक सक्रियता के कारण वे जीते जी किंवदंती बन गए थे। उत्तम कुमार ने केवल नायक की भूमिकाएँ नहीं निभाईं, वे तो बंगाल की पीढ़ियों के लिए स्वयं 'नायक' की परिभाषा बन गए।

जुलाई 1980 के उस दिन कोलकाता अपने प्रिय अभिनेता के निधन पर मानो थम गया था। लेकिन पर्दे का वह नायक कभी ग़ायब नहीं हुआ। जब भी उत्तम कुमार की कोई पुरानी फिल्म प्रदर्शित होती है, जब-जब पर्दे पर उनकी जानी-पहचानी मुस्कान नज़र आती है, जब भी नई पीढ़ी किसी नायक को खोजती है, वे फिर उनके बीच होते हैं, वे लौट आते हैं। बांग्ला फिल्म उद्योग में उनका महत्त्व और योगदान, फिल्म नायक के एक संवाद में बख़ूबी सिमटा है।

ज्योतिः "मूवी में आपके अलावा और क्या है?"

अरिंदमः "इसमें मैं हूँ। क्या इतना काफ़ी नहीं?"

'वोकल फ़ॉर लोकल'

'उत्सव अर्थव्यवस्था' और आत्मनिर्भरता का संकल्प

भारत में पर्व केवल हमारी आस्था और परम्पराओं का ही प्रतीक नहीं हैं, बल्कि ये हमें एक-दूसरे से गहराई से जुड़ने और समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने का भी एक बड़ा अवसर प्रदान करते हैं। साल के इस समय में जब एक के बाद एक त्योहारों का सिलसिला शुरू होता है, तो यह केवल खुशियों का नहीं, बल्कि हमारी 'उत्सव अर्थव्यवस्था' का भी एक अहम पड़ाव होता है।

जन्माष्टमी

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी जैसे पावन पर्व देश के हर कोने में भारी उल्लास के साथ मनाए जाते हैं। इस तरह के उत्सव हमारे बाज़ारों में नई ऊर्जा और रौनक़ भर देते हैं।

विश्वकर्मा पूजा

इसी महीने 'विश्वकर्मा पूजा' का भी आयोजन होता है। यह त्योहार विशेष रूप से हमारे आसपास के उन सभी कारीगरों, शिल्पकारों और विश्वकर्मा साथियों के सम्मान और उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का दिन है, जो अपने कौशल और कड़ी मेहनत से राष्ट्र निर्माण में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं।

दीपावली की तैयारियाँ

इन प्रमुख त्योहारों के सम्पन्न होने के साथ ही देश में दीपावली की तैयारियाँ भी धीरे-धीरे ज़ोर पकड़ने लगती हैं। इस समय स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देने वाले 'वोकल फॉर लोकल' अभियान का महत्त्व सबसे अधिक हो जाता है। यह बात स्पष्ट रूप से समझनी होगी कि 'वोकल फॉर लोकल' का दायरा केवल दीपावली पर कुम्हार से मिट्टी के दीये ख़रीदने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसका विज़न बहुत व्यापक और दूरदर्शी है।

स्थानीय उत्पादों की प्राथमिकता

त्योहारों के इस मौसम में हम अपने घरों की सजावट से लेकर अन्य रोज़मर्रा के उपयोग के लिए ढेरों सामान ख़रीदते हैं। ऐसे में यह सुनिश्चित करना हम सभी की ज़िम्मेदारी है कि हम बाज़ार से जो भी ख़रीदें, वह भारत में हमारे अपने लोगों द्वारा बना हो। भारत के पूरी तरह आत्मनिर्भर बनने का मार्ग स्वदेशी उत्पादों पर गर्व करने और उन्हें अपनाने से ही प्रशस्त होगा।

जन–जन का महत्त्व

इस संदेश को जन–जन तक पहुँचाने में समाज के हर वर्ग की अहम भूमिका है। विशेष रूप से 'रचनात्मक संसार' के साथियों, सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स और प्रसिद्ध हस्तियों को भी आगे आकर लोगों को जागरूक करने का ज़िम्मा उठाना चाहिए।

महत्त्वपूर्ण भूमिका

जब हम सब मिलकर त्योहारों के इस मौसम में स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता देंगे तो यह हमारे स्थानीय कारीगरों के घरों में ख़ुशियों के असली दीये जलाएगा और भारत को आर्थिक रूप से भी नई मज़बूती प्रदान करेगा।

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

कार्रवाई के लिए आह्वान

13८वाँ संस्करण

त्योहारों के इस मौसम में, मैं एक बार फिर, आपसे, 'वोकल फ़ॉर लोकल' का आग्रह दोहराऊँगा... हम अपने घर के लिए जो भी सामान खरीदते हैं, उसे एक बार जरूर देख लें कि वो भारत में बना हो।

मेरा आग्रह है कि वे (कॉन्टेंट क्रिएटर्स) अलग-अलग भाषाओं में ऐसा कॉन्टेंट बनाएँ जिससे इस दिशा (नशा मुक्त भारत) में समाज को मदद मिले।

आइए, भारत के युवा को नशे से दूर रखने, नशे से मुक्त रखने - इस पवित्र कार्य में हम सब अपनी भूमिका निभाएँ। आप अपने प्रयास को #नशामुक्तयुवा के साथ सोशल मीडिया पर भी जरूर शेयर करें।

आपके आस-पास भी ऐसे अनेक लोग होंगे, जो अपने छोटे-छोटे प्रयासों से समाज में बड़ा बदलाव ला रहे हैं। आप उनके बारे में 'मन की बात' के लिए जरूर लिखिए।

Baijayant Jay Panda @PandaJay

PM Modi lauds 'Mission ShaktiSAT' in Mann Ki Baat; 12,000 girl students from 108 nations to build satellite for lunar orbit
aninews.in/news/national/...

via NaMo App

PM Modi lauds 'Mission ShaktiSAT' in Mann Ki Baat: 12,000 girl students from 108 nations to build satellite for lunar orbit

ANI NEWS AUGUST 31, 2026

PM Modi during the 137th episode of 'Mann Ki Baat', highlighted India's growing leadership in space technology and heaped praises on the 'Mission ShaktiSAT' initiative. He said, "Through this mission, 12,000 girl students from 108 countries are getting the opportunity to learn satellite technology and advance in the field of innovation." He emphasised that the initiative is not just limited to urban centres but is reaching the most remote corners of the country.

Dr. Sukanta Majumdar @DrSukantaBJP

Today, at Indira Gandhi Memorial High School in Dum Dum, I joined Hon'ble @BJP4India National General Secretary Shri @sunilbansalbjp Ji and other distinguished Karyakartas in listening to the 137th episode of Hon'ble Prime Minister Shri @narendramodi Ji's "Mann Ki Baat."

"Mann Ki Baat" continues to serve as a powerful platform for connecting with the people of India, celebrating the nation's achievements, and bringing inspiring stories and voices from every corner of the country to the forefront.

It remains a meaningful reflection of Jan Bhagidari and the collective spirit of a confident, self-reliant and progressive India.

G Kishan Reddy @kishanreddybjp

In the 137th episode of Mann Ki Baat, Hon'ble Prime Minister Shri @narendramodi Ji highlighted the inspiring journeys of Babita Sharma ji from Ghaziabad and T.S. Ningamma ji from Bengaluru, showing how timely financial support under PM SVANidhi can help women expand their businesses and improve their families' livelihoods.

The PM SVANidhi Yojana is giving new strength to lakhs of street vendors across the country. Women account for approximately 46% of the scheme's beneficiaries, with around 35 lakh women using its support to grow their businesses. When a woman's business grows, the future of her entire family advances along with it.

#MannKiBaat

Pijush Hazarika @Pijush_hazarika

PM Modi Urges Citizens To Embrace 'Vocal For Local' During Festive Season In 137th 'Mann Ki Baat'
news18.com/amp/india/pm-m... via NaMo App

Piyush Goyal @PiyushGoyal

त्योहारी सीजन में प्रधानमंत्री @NarendraModi जी का देशवासियों से Vocal For Local का आग्रह...

#MannKiBaat

Rajul Pandya @irajulpandya

From hobby to livelihood: PM Modi highlights Nagaland flower grower Vesalu Puro in Mann Ki Baat
nagalandtribune.in/from-hobby-to-...

via NaMo App

From hobby to livelihood: PM Modi highlights Nagaland flower grower Vesalu Puro in Mann Ki Baat

NAGALAND TRIBUNE AUGUST 31, 2026

PM Modi highlighted the story of Vesalu Puro, a flower grower from Phek district of Nagaland, in the 137th episode of Mann Ki Baat. He said Puro's journey demonstrated how a small hobby can open the door to significant economic opportunities. In 2021, she began cultivating flowers on a small scale, initially driven by her passion. He pointed out that flowers which were once confined largely to local markets are now being transported from Nagaland to major cities.

Shivendrasinh A Bhonsle @Shivendraraje11

Translated from Marathi Show original

'Mann Ki Baat' is a program of the Honorable Prime Minister Narendra Modi ji, which is a symbol of his people-oriented leadership.

The live broadcast of Honorable Modi ji's 'Mann Ki Baat' program was organized at Satara Suruchi. On this occasion, we were present with our family and listened to Modi ji's thoughts. On this occasion, all office-bearers, workers, and citizens were present.

[Mann Ki Baat, Narendra Modi, BJP4India, KSR Global Aquarium, Sindhudurg, BJP4Maharashtra, RavindraChavan4MahaBJP]

Sunil Deodhar @Sunil_Deodhar

Listened to Prime Minister Shri @narendramodi Ji's 'Mann Ki Baat' with the young volunteers of the upcoming #NEStFest2026.

More than 20,000 young people have already registered to attend this exciting celebration of youth, energy and nation-building.

An inspiring interaction with the voice of the nation and the enthusiasm of India's youth! 🇮🇳

Tulla Veerender Goud @TVG_BJP

Watched PM Shri @narendramodi Ji's 'Mann Ki Baat' programme at Booth Nos. 459 and 460 in Hastinapuram Division, Rangareddy District, along with @BJP4Telangana President Shri @N_RamchanderRao Ji, Rangareddy Urban District President Shri @Vsr_Vanipally Ji, and other leaders and karyakartas.

The Prime Minister's message on India's progress, promoting Swadeshi products and supporting local businesses was truly inspiring.

The Kaipullai @thekaipullai Follow

Something extraordinary actually happened today.

Stuff so extraordinary, that even if it comes as a dream, you dismiss it as something that is impossibly improbable.

Thanks to your support and blessings, today I had the ultimate honor and privilege of having a conversation with our honorable Prime Minister on Mann Ki Baat about BharatRajya.com

I still can't believe that he actually spoke to me, asked me about the website, its features and some questions on general history too. I am still in a daze.

For an amateur builder like me, i don't think there is a greater recognition or validation than this.

This conversation has given me enough motivation to take BharatRajya to the next level and make it the ideal history reference and visualization website for everyone.

Thank you @narendramodi ji, for encouraging people like us and inspiring us to achieve greater heights.

These is one conversation I will not forget in this lifetime. Or maybe even the next.

And rest assured sir, I won't let you down.

Vishwajit Rane @visrane

Spent the morning among the nagriks and artisans of Usgao today, ahead of the Hon'ble PM Shri @narendramodi ji's Mann Ki Baat address, as part of our continued Jan Sampark outreach. Interacted with our talented Ganesha idol makers who are busy this season ahead of Ganesh Chaturthi, and reaffirmed my appreciation for the skill, patience and dedication they bring to this sacred craft every single year.

As a mark of support to our local artisans, distributed compressor painting machines to our Ganesh idol makers at Usgao today. These machines will bring greater efficiency to the painting and finishing of Ganpati idols, easing the workload of our craftsmen while helping preserve this beautiful traditional art for generations to come.

Encouraged our artisans to continue choosing clay idols, in line with the vision shared by the PM in Mann Ki Baat. Every clay idol bought from a local potter is a step towards a stronger Vocal for Local Goa, it protects our rivers, sustains our traditional artisans, and keeps our culture rooted in our own soil. This is the spirit of Atmanirbhar Bharat lived out in our own villages.

Grateful for the warmth of Usgao's nagriks and proud to stand with our artisans who carry this tradition forward.

Jan Bhagidari, Jan Vishwas. Building a Viksit Goa, one ward at a time.

PM's 'Mann Ki Baat' address to nation

Make a drug-free India: Modi appeals to citizens

Says addiction engulfs not just an individual but the entire family and society have to bear consequence

#NEW DELHI

Prime Minister Narendra Modi on Sunday appealed to citizens to unite against drug abuse and build a stronger future for the youth, noting that addiction engulfs not just an individual but impacts the entire society. In his monthly radio address 'Mann Ki Baat', he noted that the 'Drug-Free Youth for a Developed India' campaign is rapidly gaining momentum across the country and stressed that its objective is clear: 'Drug-free youth, drug-free India'.

The prime minister said he was happy that this campaign has not remained merely a formality as many people, especially the youth, are becoming a part of it in large numbers. "After all, this is our collective resolve for the health, happiness, and bright future of India's youth. Let us all play our part in this noble mission to keep India's youth away from drugs and free from addiction," he said. Modi said drug addiction does not just engulf a single individual as entire family and society have to bear the consequences. "I would like to commend those who raise awareness against drugs and step forward to help individuals struggling with addiction," he said. PTI

ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ୧୩୭ତମ ଅଧ୍ୟାୟର ରେଡ଼ିଓ ଅଭିଭାଷଣ ମନ୍ କୀ ବାତ୍

ଦେବ୍ରିଗଡ଼ର ଆଦିବାସୀ ମହିଳା ମୈଥିଳୀ ଭୁଏଁଙ୍କୁ ପ୍ରଶଂସା କଲେ

[illegible]

मन की बात में एक ऐसी वेबसाइट का उल्लेख जो बताती है कि कब, कहां था किसका शासन

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात में एक वेबसाइट की जानकारी दी जिसमें भारतीय इतिहास के अलग-अलग कालखंड में किसका शासन रहा है इसकी जानकारी हासिल की जा सकती है। मन की बात के 137वें एपिसोड में प्रधानमंत्री ने कहा कि (bharatrajya.com) वेबसाइट पर वर्ष चुनकर आसानी से पता लगाया जा सकता है कि किस समय भारत के किस हिस्से में किसका शासन था। उन्होंने कहा कि इस वेबसाइट को बहुत ही सरल रखा गया है।

कार्यक्रम के लिए प्रधानमंत्री ने वेबसाइट बनाने वाले कृष्ण शेषाद्रि से फोन पर बातचीत भी की। इसमें शेषाद्रि ने बताया कि भारतीय इतिहास में कुछ गिने-चुने शासकों के बारे में पढ़ाया जाता है लेकिन हमारा इतिहास बहुत से नायकों से भरा हुआ है।

प्रधानमंत्री ने कार्यक्रम में मिलकर देश को नशामुक्त बनाने का आह्वान करते हुए सरकार की ओर से चलाए जा रहे अभियान की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह अभियान पूरे देश में तेजी से आगे बढ़ रहा है। इसका लक्ष्य बिल्कुल साफ है नशा मुक्त युवा, ड्रग्स मुक्त भारत।

प्रधानमंत्री ने इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस पर सूर्यपथ तिरंगा कार्यक्रम के माध्यम से सूर्य के पथ के साथ तिरंगा फहराए जाने का उल्लेख किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि दुनिया भर में एक अनोखी यात्रा निकाली गई। फिजी के सुबह में सूरज की पहली किरण के साथ तिरंगा फहराया गया। इसके बाद एशिया, अफ्रीका, यूरोप और अमेरिका के सैन फ्रांसिसको तक भारतीय मिशन और पोस्ट पर तिरंगा लहराया गया।

प्रधानमंत्री मोदी ने कार्यक्रम में पीएम स्वनिधि निधि योजना का जिक्र किया। उन्होंने बताया कि योजना लाखों महिला स्ट्रीट वेंडर्स को अपने कारोबार का विस्तार करने, आगे बढ़ने और उन्हें अपने परिवार को बेहतर भविष्य देने में मदद कर रही है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आज स्वच्छता जनता का संकल्प बनती जा रही है। उन्होंने बताया कि कैसे उत्तर प्रदेश के रामपुर में अपने इलाकों की सफाई से लेकर अमरनाथ यात्रा के दौरान स्वच्छता अभियान तक कैसे जनभागीदारी से लोग अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ रख रहे हैं।

सफलता की कहानियां बताते हुए प्रधानमंत्री ने बताया कि कैसे नागालैंड के फेक जिले की रहने वाली वेसालु पुो ने फूलों के प्रति अपने जुनून को सफल व्यवसाय में बदल दिया। वहीं, कैसे ओडिशा के देवगढ़ क्षेत्र में मैथिली भुए जी की वन उत्पादों पर निर्भरता से पर्यावरण-पर्यटन का हिस्सा बनने की यात्रा ने कई महिलाओं को वन संरक्षण में योगदान देने के लिए प्रेरित किया।

'मन की बात' की 137वीं कड़ी में बोले प्रधानमंत्री : त्योहारों में स्वदेश में बना सामान खरीदें

'वोकल फॉर लोकल' को बनाएं जन अभियान : मोदी

वार्ता

नई दिल्ली. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देशवासियों से 'वोकल फॉर लोकल' अभियान को व्यापक जन आंदोलन बनाते हुए आने वाले त्योहारों के दौरान देश में बने सामान को महत्व देने का आग्रह किया और कहा है कि आत्मनिर्भर भारत का मार्ग स्वदेशी उत्पादों पर गर्व करने से ही प्रशस्त होगा। मोदी ने रविवार को आकाशवाणी से प्रसारित अपने मासिक कार्यक्रम 'मन की बात' की 137वीं कड़ी में कहा कि पर्व और त्योहार न केवल देश की परंपराओं का हिस्सा हैं, बल्कि ये त्योहार लोगों को एक-दूसरे से जुड़ने का अवसर भी प्रदान करते हैं। उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में जन्माष्टमी, विश्वकर्मा पूजा और दीपावली जैसे महत्वपूर्ण पर्व मनाये जाएंगे। विश्वकर्मा पूजा भी होगी और इस अवसर पर लोगों को अपने आसपास के कारीगरों, शिल्पकारों और निर्माणकर्मी साथियों का सम्मान करना चाहिए। प्रधानमंत्री ने कहा कि दीपावली की तैयारियां भी धीरे-धीरे शुरू हो रही हैं और त्योहारों के इस मौसम में वह एक बार फिर देशवासियों से 'वोकल फॉर लोकल'

शेष पृष्ठ 4 पर

बेटियों के सपनों की उड़ान अंतरिक्ष तक पहुंच रही

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि आज भारत की बेटियों के सपनों की उड़ान धरती से निकलकर अंतरिक्ष तक पहुंच रही है। मोदी ने बेटियों की बढ़ती अंतरिक्ष आकांक्षाओं और विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्र में उनकी भागीदारी का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि आज भारत की बेटियों के सपनों की उड़ान धरती से निकलकर अंतरिक्ष तक पहुंच रही है। उन्होंने कहा कि इस प्रयास का नाम 'मिशन सैटेलाइट' है। इसके माध्यम से 108 देशों की 12 हजार छात्राओं को सैटेलाइट तकनीक सीखने और नवाचार के क्षेत्र में आगे बढ़ने का अवसर मिल रहा है।

मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री मोदी के 'मन की बात' कार्यक्रम को सुना

जयपुर, समाचार जगत न्यूज. मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने रविवार को मुख्यमंत्री निवास पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'मन की बात' कार्यक्रम का 137वां एपिसोड सुना। इस दौरान प्रधानमंत्री ने महिला स्वावलंबन, नशा मुक्त युवा सहित विभिन्न मुद्दों को लेकर बात रखी। साथ ही देश के विभिन्न इलाकों के लोगों के जीवन में आए सकारात्मक बदलाव से भी रूबरू करवाया। मुख्यमंत्री शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लगातार मातृशक्ति के लिए कल्याणकारी योजनाएं ला रहे हैं। उन्होंने कहा कि बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, जन-धन खाते, उज्ज्वला योजना, पीएम आवास योजना एवं पीएम स्वनिधि योजना जैसी अनेक जनकल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से देश की महिलाओं के जीवन में बदलाव आया है। उन्होंने कहा कि राष्ट्र को मजबूत बनाने के लिए महिलाओं को सशक्त करना जरूरी है। यही कारण है कि हमारी सरकार ने पिछले दोनों बजट में विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ी महिलाओं के साथ संवाद किया और उनके सुझावों को बजट में शामिल भी किया। वहीं, बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए मेधावी छात्राओं को साइकिल एवं स्कूटी वितरित की जा रही है। वहीं, गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए मां योजना के तहत निशुल्क जांच एवं सोनोग्राफी जैसी सुविधा प्रदान की जा रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राजीविका के जरिए महिलाओं का सामाजिक एवं आर्थिक विकास भी सुनिश्चित किया जा रहा है। वहीं, आशा सहयोगिनियों के मानदेय में 10 प्रतिशत बढ़ोतरी की गई है। इसी प्रकार बैंक सखी और पशु सखी जैसी पहलों के जरिए महिलाओं तक योजनाओं का लाभ पहुंचाया जा रहा है।

போதைப்பொருள் இல்லாத இந்தியாவை உருவாக்க ஒன்றுபடுங்கள்

'மனதின் குரல்' நிகழ்ச்சியில் பிரதமர் மோடி அழைப்பு

பிரதமர் மோடி

तरुणाई, नशामुक्त भारत अन् नारीशक्ती

'मन की बात'मध्ये पंतप्रधान नरेंद्र मोदींचा युवा भारताला संदेश

गोवन वार्ता ■ न्यूज डेस्क
नवी दिल्ली

पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांनी रविवारी 'मन की बात'च्या १३७ व्या भागातून देशाशी संवाद साधला. यावेळी त्यांनी देशाच्या विविध भागांत सुरू असलेल्या नवीन उपक्रमांवर आणि सामाजिक बदलाच्या उद्देशाने हाती घेतलेल्या प्रयत्नांवर प्रकाश टाकला. तरुणांना अमली पदार्थांच्या व्यसनापासून दूर ठेवणे, देशाच्या इतिहासाची ओळख करून देणारी नवीन वेबसाईट, स्वच्छता आणि महिला सक्षमीकरणावर पंतप्रधानांनी विशेष भर दिला.

'विकसित भारतासाठी व्यसनमुक्त युवक' या मोहिमेबाबत बोलताना पंतप्रधान म्हणाले की, ही मोहीम आता वेगाने लोकांपर्यंत पोहोचत आहे. तरुणांना अमली पदार्थांच्या व्यसनापासून वाचवणे ही केवळ सरकारचीच नव्हे, तर समाज आणि कुटुंबांचीही संयुक्त जबाबदारी आहे,

असे त्यांनी स्पष्ट केले.

येत्या काळात जनसहभागातून ही मोहीम देशभरात १०० आठवडे चालवण्याचे नियोजन असून, यादरम्यान खेळ, वॉकेथॉन, सांस्कृतिक कार्यक्रम आणि पथनाट्यांच्या माध्यमातून तरुणांना जोडले जात आहे.

भारताच्या इतिहासाला लोकांपर्यंत पोहोचवण्यासाठी एका नवीन वेबसाईटचा शुभारंभ करण्यात आल्याची माहिती पंतप्रधानांनी दिली. या व्यासपीठावर देशाच्या विविध प्रदेशांतील शासक आणि ऐतिहासिक घटनांची सर्व माहिती एकाच ठिकाणी उपलब्ध होणार असून, यादरम्यान तरुणांना समृद्ध इतिहासाशी जोडणे हा मुख्य उद्देश आहे.

समाजात सूक्ष्म स्तरावर होणाऱ्या बदलांचे कौतुक करताना मोदींनी स्वच्छतेवर भर दिला. स्वच्छता ही केवळ एका मोहिमेपुरती मर्यादित न राहता ती प्रत्येकाच्या सवयीचा भाग बनली पाहिजे, असे ते म्हणाले.

उत्तम कुमार यांना आदरांजली

'मन की बात'च्या शेवटी, ३ सप्टेंबर रोजी प्रसिद्ध अभिनेते उत्तम कुमार यांची जन्मशताब्दी होणार असल्याचे सांगत पंतप्रधानांनी त्यांना आदरांजली वाहिली. एक अष्टपैलू कलाकार म्हणून उत्तम कुमार यांनी आपल्या उत्कृष्ट अभिनयाने प्रेक्षकांच्या मनात कायमचे स्थान निर्माण केल्याचे पंतप्रधान म्हणाले.

PM spotlights grassroots innovation, cleanliness and self-reliance in Mann Ki Baat

New Delhi, (UNI) Prime Minister Narendra Modi on Sunday hailed grassroots innovation, citizen-led cleanliness campaigns, women entrepreneurs and young people working for social change, while renewing his call for a drug-free India, greater participation in the 'Vocal for Local' movement and sustained public commitment to the Swachh Bharat mission during the 137th episode of his monthly radio programme, Mann Ki Baat. Addressing the nation, Prime Minister Narendra Modi said the programme had consistently sought to bring before the country innovative ideas and initiatives driven by the energy and creativity of ordinary citizens. He highlighted the work of Mumbai-based history enthusiast Krishna Seshadri, who has used technology to make India's past more accessible and engaging. Modi interacted with Seshadri, the creator of BharatRajya.com, a website that allows users to select a particular year and discover which rulers and kingdoms governed different parts of India at that time. "I found this quite interesting too and thought of learning more about it," the Prime Minister said, describing the initiative as an innovative effort to present history in an engaging format. Seshadri, an engineer and management graduate with a professional background in marketing, said his childhood fascination with history had inspired him to explore new ways of presenting the subject. He said conventional teaching often focused disproportionately on a few major empires, leaving many significant dynasties and kingdoms less familiar to students and the public. He referred to the Cholas, Pallavas, Kashmir's Karkota dynasty and the Ahoms as historical powers whose contributions deserved wider recognition. The website, he said, had been designed to make history more accessible while allowing users to contribute corrections, suggestions and additional information.

Modi praised the collaborative nature of the initiative, saying such efforts could help not only students of history but citizens at large understand India's past in a more interesting and accessible manner. The Prime Minister then turned to the government's 'Nasha-mukt Yuva for Viksit Bharat' campaign, saying the nationwide initiative was gaining momentum with the objective of building a drug-free youth population and a drug-free India. "Drug addiction does not just engulf a single individual; the entire family and society have to bear the consequences," Modi said, commending those working to spread awareness and support people struggling with addiction. Calling upon young musicians, theatre groups, students and content creators to contribute to the campaign, he urged them to produce songs, short plays and digital content highlighting the dangers of drugs as well as the path towards recovery. "Our country has no shortage of excellent content creators. I urge them to create content in various languages that helps society in this endeavour," he said, asking citizens to share their creative initiatives using the hashtag NashaMuktYuva.

Modi also praised the patriotic fervour witnessed during August, referring to the 'Har Ghar Tiranga' campaign and a series of national occasions, including National Handloom Day, the anniversary of the Quit India Movement, Independence Day, Partition Horrors Remembrance Day and National Space Day. He said this year's celebrations had acquired additional significance with the 150th anniversary of Vande Mataram, adding that more than eight crore Tiranga selfies had been uploaded during the campaign. The Prime Minister also referred to the 'Suryapath Tiranga' initiative, under which the national flag was unfurled across different parts of the world following the path of the rising sun, beginning in Suva, Fiji, and continuing through Indian missions and posts across Asia, Africa and Europe before reaching San Francisco in the United States. "Such efforts bind society together and deepen our connection with the nation," Modi said. Highlighting women's economic empowerment, Modi praised the PM SVANidhi Yojana and said women constituted around 46 per cent of its beneficiaries, with nearly 35 lakh women using assistance under the scheme to expand their small businesses. He cited the examples of Babita Sharma of Ghaziabad, who expanded her small stall selling religious and worship-related items into a proper shop after receiving financial assistance, and T.S Nagamma of Bengaluru, who used support under the scheme to strengthen her family's food business.

"When a woman's business grows, the future of her entire family advances along with it," Modi said, adding that higher incomes helped improve children's education, meet household needs and strengthen women's self-confidence. Reiterating his long-standing emphasis on cleanliness, the Prime Minister highlighted citizen-driven initiatives in different parts of the country, including the efforts of Akash and Rahul, two young men from Patwai village in Uttar Pradesh's Rampur district. He said the two friends began cleaning their surroundings after noticing increasing litter and gradually built a youth group called 'Clean-up Patwai'. The group has cleaned four Ganga ghats, removed more than a tonne of plastic waste and undertaken cleaning drives at ponds and other public spaces. Modi also praised sanitation workers and pilgrims who participated in cleanliness initiatives during the recent Shri Amarnath Ji Yatra. He said more than 400 metric tonnes of waste were collected and processed during the pilgrimage, while over 16,000 pilgrims took cleanliness pledges and more than 10,000 received 'Responsible Yatri' certificates. He further highlighted an initiative in which dung from horses and mules used during the pilgrimage was converted into biogas, with the clean energy being used to light the 'Swachh Jyot'. "In essence, cleanliness became a form of service and faith during this holy pilgrimage to Baba Barfani," Modi said, stressing that villages, cities, rivers and pilgrimage sites were shaped by the behaviour and collective responsibility of citizens.

मन की बात • नशामुक्ति पर कंटेंट बनाएं युवा

नशे के खिलाफ एकजुट हों, स्लोगन-नाटक लिखें: मोदी

भास्कर न्यूज | नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों से नशे के खिलाफ एकजुट होने की अपील की है। उन्होंने कहा कि नशे की लत सिर्फ एक व्यक्ति को नहीं घेरती, इसका असर पूरे परिवार और समाज पर पड़ता है। मोदी ने रविवार को 'मन की बात' कार्यक्रम में कहा कि 'विकसित भारत के लिए नशामुक्त युवा' अभियान तेजी से आगे बढ़ रहा है और लक्ष्य साफ है- नशामुक्त युवा, नशामुक्त भारत।' मोदी ने कहा कि इस अभियान से बड़ी संख्या में लोग- खासकर युवा, इससे जुड़ रहे हैं। पीएम ने युवाओं से कहा कि वे नशे के खिलाफ स्लोगन, गाने, शॉर्ट प्ले और अलग-अलग भाषाओं में कंटेंट बनाएं। इसे सोशल मीडिया पर हैशटैग के साथ साझा करें।

स्ट्रीट वेंडर्स योजना में 46% लाभार्थी महिलाएं: स्ट्रीट वेंडर निधि का जिक्र करते हुए मोदी ने कहा कि करीब 46% लाभार्थी महिलाएं हैं, यानी देशभर में 35 लाख महिलाएं इससे लाभान्वित हैं।

'मन की बात' में गूंजा नंदग्राम की बबीता का संघर्ष, पीएम मोदी ने बताया महिला सशक्तिकरण की मिसाल

वैभव न्यूज ■ गाजियाबाद

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात में नंदग्राम की बबीता के संघर्ष और सफलता की कहानी साझा की। उन्होंने बबीता को महिला सशक्तिकरण और सरकारी योजनाओं के जरिए आत्मनिर्भर बनने का उत्कृष्ट उदाहरण बताया। विपरीत परिस्थितियों के बावजूद बबीता ने हिम्मत नहीं हारी और छोटे स्तर से शुरू किए कारोबार को धीरे-धीरे आगे बढ़ाया। आज वह खुद आत्मनिर्भर होने के साथ करीब 100 अन्य लोगों को भी अपना छोटा कारोबार शुरू करने के लिए प्रेरित और मदद कर चुकी हैं।

कोरोना महामारी के दौरान लगे लॉकडाउन का असर बबीता के कारोबार पर भी पड़ा था। काम बंद होने से परिवार के सामने आर्थिक संकट खड़ा हो गया। आर्थिक तंगी के कारण पहले चल रहा पूजा सामग्री का कारोबार भी बंद करना पड़ा। हालात मुश्किल होने के बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी।

वर्ष 2022 में 10 हजार रुपये का लोन लेकर नंदग्राम टैंपो स्टैंड के पास दोबारा पूजा सामग्री की दुकान शुरू की। इसके बाद जरूरत के मुताबिक उन्होंने आगे भी लोन लेकर कारोबार का विस्तार किया। बबीता तीन बेटों की मां हैं। उनके बड़े बेटे विनय शर्मा की उम्र 26 वर्ष और दूसरे बेटे राहुल शर्मा की उम्र 25 वर्ष है, जबकि सबसे छोटे बेटे ने हाल ही में दसवीं की परीक्षा पास की है। पति से अलग रहकर बबीता ने परिवार की जिम्मेदारी संभाली। आर्थिक और पारिवारिक चुनौतियों के बीच उन्होंने अपने कारोबार को सहारा बनाया और मेहनत के दम पर परिवार का भरण-पोषण किया। बबीता की सफलता सिर्फ उनके परिवार तक सीमित नहीं रही। उन्होंने करीब 100 अन्य लोगों को भी छोटे स्तर पर अपना व्यवसाय शुरू करने में मदद की है। उनका कहना है कि मेहनत और हौसले के साथ सरकारी योजनाओं का सही उपयोग किया जाए तो मुश्किल परिस्थितियों से बाहर निकला जा सकता है। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा %मन की बात' में उनकी कहानी साझा किए जाने से बबीता की मेहनत को नई पहचान मिली है। उनकी कहानी उन महिलाओं के लिए प्रेरणा बन गई है, जो सीमित संसाधनों के बावजूद अपने परिवार को संभालने और आत्मनिर्भर बनने का सपना देखती हैं।

मन की बात का 137वां एपिसोड: प्रधानमंत्री मोदी ने की अपील

युवा नशा मुक्ति अभियान को बढ़ाएं

एवोकाडो की खेती से किसान कमा रहे बेहतर आय

उत्तम कुमार और 'वंदे मातरम' का किया जिक्र

छात्राओं को अंतरिक्ष तकनीक सीखने का अवसर

आठ करोड़ से अधिक तिरंगा सेल्फी अपलोड

मन की बात' का 137वां एपिसोड में बोले पीएम- देश में एवाकाडो की मांग बढ़ी

मोदी बोले- युवा नशा मुक्ति थीम पर कंटेंट बनाएं इस बार 8 करोड़ तिरंगा सेल्फी अपलोड की गई

وزیراعظم نے "من کی بات" میں امرناتھ یاترا کی صفائی کے ماڈل کو کیا اجاگر

زیرو ویسٹ ٹو لینڈفل اپروچ کے تحت MT414.46 فضلہ کو سائنسی طریقے سے پروسیس کیا گیا

'نشہ مکت یووا۔وکست بھارت' مہم زور پکڑ رہی ہے

منشیات کا خاتمہ اجتماعی ذمہ داری

"ووکل فار لوکل کو عوامی مہم بنائیں: وزیراعظم مودی کی 'من کی بات'"

'मन की बात' में पीएम मोदी ने जागरुकता पर दिया जोर

कई नामचीन और कलाकारों का भी किया जिक्र

'नशा-मुक्त युवा, नशा-मुक्त भारत' से ही देश होगा सुरक्षित और मजबूत, परिवार को बचाएं

पीएम मोदी ने युवाओं से की 'नशामुक्त भारत' की अपील, लोगों की मदद को आगे आएं

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने 'मन की बात' कार्यक्रम के 137वें एपिसोड में नशा-मुक्त भारत और युवाओं के लिए एक मजबूत भविष्य की बात कही। पीएम मोदी ने कहा कि 'नशा मुक्त युवा-विकसित भारत' अभियान पूरे देश में तेजी से आगे बढ़ रहा है। इसका मकसद साफ है- नशा-मुक्त युवा, नशा-मुक्त भारत। बहुत से लोग, खासकर युवा, इसका बड़ा हिस्सा बन गए हैं। आखिरकार, यह भारत के युवाओं की सेहत, खुशी और उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारा सामूहिक संकल्प है। नशा सिर्फ एक व्यक्ति को प्रभावित नहीं करता, इसके नतीजे पूरे परिवार और समाज को भुगतने पड़ते हैं। मैं उन लोगों की तारीफ करना चाहता हूं जो नशे के बारे में जागरूकता फैलाते हैं और नशे की लत से जूझ रहे लोगों की मदद के लिए आगे आते हैं।

कार्यक्रम के 137वें एपिसोड में कहा

वोकल फॉर लोकल का मंत्र दोहराया

अभिनेता उत्तम कुमार की जन्म-शताब्दी मनाएंगे

पीएम मोदी ने कहा कि 3 सितंबर को हम महानायक उत्तम कुमार की जन्म-शताब्दी मनाएंगे। उत्तम कुमार एक बहुमुखी अभिनेता थे, जो अपने अभिनय से लोगों के दिलों में रच-बस गए। फिल्म के चाहने वालों का मानना है कि सत्यजीत रे ने फिल्म 'नायक-द हीरो' की पूरी स्क्रिप्ट महानायक उत्तम कुमार को ध्यान में रखकर लिखी थी। सत्यजीत रे ने कहा था कि उनमें गरिमा के साथ-साथ अद्भुत भावनात्मक गहराई भी थी। उनके जीवन से कभी भी हार न मानने की एक और बड़ी सीख भी मिलती है।

भारतराज्य डॉट कॉम एक नया नवाचार

प्रधानमंत्री ने मुंबई के कृष्णा शेणाई से बातचीत की। पीएम मोदी ने न केवल उनके काम की तारीफ की, बल्कि फोन पर हुई बातचीत को देश-दुनिया के सामने भी साझा किया। कृष्णा ने भारतीय इतिहास को आसान और दिलचस्प तरीके से समझने के लिए एक खास वेबसाइट तैयार की है। भारत राज्य डॉट कॉम नाम की वेबसाइट बनाई है। इसका उद्देश्य भारतीय इतिहास को एक अलग और सरल तरीके से लोगों तक पहुंचाना है।

अवाकाडो फल की खेती किसानों के लिए मददगार

पीएम मोदी ने कहा कि आजकल अवाकाडो फल की बड़ी धूम है। इस फल को पहले शायद ही कोई जानता था। इसकी कीमत और मांग दोनों कम थी, लेकिन आज इसे डाइनिंग टेबल पर खूब देखा जा रहा है। आज यह स्वास्थ्य और प्रीमियम मार्केट की पसंद बन गया है। हमारे किसान भाई-बहनों के लिए भी ये बहुत मददगार है। आंध्र प्रदेश में कडप्पा के वरदराज का उदाहरण है। वे कई वर्षों से अपने खेत में टमाटर और केले की खेती कर रहे थे। एक दिन उन्होंने अपने दोस्तों के फार्म में अवाकाडो की फसल देखी। इसके बाद उन्होंने यूट्यूब से इस पर जानकारी जुटाई। अब तक वे करीब 4 टन अवाकाडो का उत्पादन कर चुके हैं।

छोटे से शौक से खुल सकते हैं नई संभावनाओं के द्वार

PM praises B'luru street vendor Ningamma in Mann Ki Baat

Hans News Service
Bengaluru

PRIME Minister Narendra Modi on Sunday highlighted the inspiring story of Bengaluru-based street vendor Ningamma during his 137th episode of Mann Ki Baat, praising her journey towards financial independence through the PM SVANidhi scheme. Ningamma, originally from Hassan, runs a small roadside eatery near the Hosahalli Metro station on Magadi Road in Bengaluru. She availed herself of a loan of Rs 50,000 under the PM SVANidhi scheme and used the financial support to build a sustainable livelihood. Modi cited Ningamma's story while highlighting how government-backed financial assistance is helping street vendors, particularly women, become self-reliant. He noted that women account for around 46 per cent of the beneficiaries under the scheme, describing it as an important example of women's economic empowerment. The income generated from her eatery has helped Ningamma support her family and provide education for her children. She has also reportedly extended financial assistance towards the education of underprivileged children from her earnings.

By featuring her story in Mann Ki Baat, the Prime Minister showcased how access to affordable credit can help small entrepreneurs overcome financial constraints and create independent livelihoods.

Ningamma's journey from a street vendor seeking financial support to an independent entrepreneur in Bengaluru has emerged as an example of how government schemes can translate into tangible opportunities at the grassroots level.

'नशामुक्त भारता'साठी सर्जनशीलतेचा वापर करा

'मन की बात'च्या १३७व्या भागातून पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांचे देशवासीयांना आवाहन

पंतप्रधान मोदींना उझबेकिस्तानचा सर्वोच्च सन्मान

من کی بات: وزیر اعظم نے ترقی یافتہ ہندوستان

کی تعمیر میں مددگار کوششوں کا ذکر کیا

Mann ki Baat: PM Modi calls for united front against drug abuse

PIONEER NEWS SERVICE
New Delhi

Cautioning against the perils associated with drug abuse, Prime Minister Narendra Modi on Sunday appealed to citizens to unite against this scourge and build a stronger future for the youth, noting that addiction engulfs not just an individual but impacts the entire society.

In his monthly radio address 'Mann Ki Baat', he noted that the 'Drug-Free Youth for a Developed India' campaign is rapidly gaining momentum across the country and stressed that its objective is clear: 'Drug-free youth, drug-free India'.

The prime minister said he was happy that this campaign has not remained merely a formality, as many people, especially the youth, are becoming a part of it in large numbers.

"After all, this is our collective resolve for the health, happiness, and bright future of India's youth. Let us all play our part in this noble mission to keep India's youth away from drugs and free from addiction," he said.

Modi said drug addiction does not just engulf a single individual, as the entire family and society have to bear the consequences.

"I would like to commend those who raise awareness against drugs and step forward to help individuals struggling with addiction," he said.

The Drug-Free India through the 'Nasha Mukt Bharat Abhiyaan' (NMBA) is a flagship initiative of the Government. The campaign seeks to prevent substance abuse through awareness generation, community participation, treatment, rehabilitation, aftercare and social reintegration.

The prime minister also highlighted the PM SVANidhi Yojana welfare scheme for street vendors, noting that lakhs of women are gaining strength from it.

Lakhs of women across the streets of cities and towns are engaged in selling vegetables or fruits, running tea stalls, while some are selling flowers, earthen lamps, and 'pooja' material, he noted.

"Often, a mere lack of capital prevents their businesses from growing further. But now, lakhs of such mothers and sisters are gaining new strength through the 'PM SVANidhi Yojana'," he said.

Modi said this aspect of 'women empowerment' is not discussed as much as it should be since women account for approximately 46 per cent of the beneficiaries of the 'PM SVANidhi Yojana'.

"This means that around 35 lakh women across the country are expanding their businesses by connecting with this scheme," he asserted.

Referring to two women — one from Ghaziabad and the other from Bengaluru — who have benefitted from the 'PM SVANidhi Yojana', the prime minister said when a woman's business grows, the future of her entire family advances along with it. "Children receive better education, household needs are met, and the woman's self-confidence is strengthened. This is, indeed, a living example of 'women's empowerment'," he said.

प्रधानमन्त्री मोदीले 'मन की बात'मा उत्तम कुमारलाई श्रद्धाञ्जली अर्पण गरे मुख्यमन्त्रीले कृतज्ञता व्यक्त गरे

Phek blooms on 'Mann Ki Baat'

PM spotlights Vesalu Puro's journey from flower farm to wider markets

New Delhi, Aug. 30 (IANS): Prime Minister Narendra Modi on Sunday highlighted several inspiring examples of individuals and communities who have turned their interests, local resources and innovative farming practices into new opportunities for livelihood and economic growth.

Speaking during the 137th episode of his monthly radio programme, 'Mann Ki Baat', PM Modi said, "Sometimes a small hobby opens the door to great possibilities in life. The journey of Vesalu Puro from the Phek district of Nagaland is a case in point. Vesalu ji grew up in a farming family; she had watched her parents farm since childhood and had a deep love for flowers. In 2021, she began cultivating flowers on a small scale, driven by this very passion."

He said Vesalu gradually recognised the commercial potential of flower cultivation after noticing the steady demand for flowers during weddings, festivals and other occasions.

"Gradually, she began to see a possibility in it. She observed that there was a constant demand for flowers, whether for weddings or other festivals. Vesalu decided to take her hobby further. Along the way, she received training in scientific flower cultivation from the local Krishi Vigyan Kendra. Then she planted thousands of gladiolus bulbs on just a quarter-acre of land. In her very first attempt, over 5,000 flowers bloomed," the prime minister said.

According to PM Modi, the successful first harvest marked a turning point in Vesalu's journey and encouraged her to expand her flower cultivation activities.

"Flowers that once remained confined to local markets are now travelling from Nagaland to cities like Delhi and Mumbai. Vesalu Puro ji's journey demonstrates that when a passion is combined with hard work and proper guidance, it can pave the way for new possibilities," he said.

The Prime Minister then spoke about how individual initiatives can gradually inspire larger communities and bring about meaningful changes in people's lives.

"There are many people around us who initiate a small effort, and by and by, that effort transforms the lives of countless others. There is a village named 'Dhodrokusam' in the Debrigarh region of Odisha. Until a few years ago, Maithili Bhoe ji from this village would visit the forest almost daily — sometimes to gather firewood, at other times to collect Mahua flowers and Kendu leaves, or to harvest bamboo shoots and other forest produce," PM Modi said.

He said the forest had traditionally supported the needs of Maithili's family as well as several other people living in the area. However, her association with Debrigarh ecotourism brought a significant change in the way she interacted with the forest.

PM Modi said forest conservation subsequently became an important source of livelihood for Maithili, while her efforts also encouraged other women in the region to participate in protecting the natural environment.

"Forest conservation now became a means of livelihood for her. Friends, this transformation in Maithili ji's life inspired other women as well. Today, more than 60 women are actively involved in forest conservation. Some have taken up the responsibility of protecting wildlife, others are engaged in developing grasslands and some are contributing to eco-tourism activities," he said.

Narendra Modi

> "Her flowers now travel from Nagaland to Delhi and Mumbai"

"Maithili-ji and these sisters from Debrigarh have demonstrated that it is possible to protect nature while also achieving prosperity in life. The efforts of all these sisters serve as a great inspiration for all of us," the prime minister added.

PM Modi also highlighted the growing popularity of avocados and how farmers in different parts of the country are adopting the crop to create additional sources of income.

"The avocado fruit is creating quite a buzz these days. Hardly anyone knew about this fruit in the past; both its value and demand were low, but today it is frequently seen on dining tables. It has become a preferred choice in the health and premium markets. This is also very helpful for our farmer brothers and sisters," he said.

He cited the example of Varadaraj from Kadappa in Andhra Pradesh, who had been cultivating tomatoes and bananas on his farm for several years before discovering avocado cultivation at a friend's farm.

"So far, he has produced nearly 4 tonnes of avocados. Today, he supplies them directly to local shops. The new crop, scientific advice, and direct marketing have completely transformed the earnings from his small farm," PM Modi said.

The Prime Minister also mentioned Chandrasekharan, a farmer from Kodaikanal in Tamil Nadu, who began cultivating avocados on half a hectare of land and has seen his income increase as the crop fetched good prices.

The Pioneer

Mann ki Baat: PM Modi calls for united front against drug abuse

दिव्य हिमाचल

देवभूमि का सर्वाधिक लोकप्रिय मीडिया

अगस्त में देखने को मिलते हैं देशभक्ति के अनेक रंग, 'मन की बात' में बोले PM मोदी

ETV بھارت

پی ایم مودی نے 'من کی بات' میں کہا، 'نشہ مکت یووا-وکست بھارت' مہم پورے ملک میں زور پکڑ رہی ہے

HT Hindustan Times

In Mann ki Baat, PM Modi highlights women empowerment, drug-free Bharat campaign

INDIA TV

"देश में यंग क्रिएटर्स की कमी नहीं", 'मन की बात' के 137वें एपिसोड में बोले PM मोदी

हिन्दुस्तान

गाजियाबाद की बबीता शर्मा की मेहनत के मुरीद
हुए PM मोदी, 'मन की बात' से बढ़ाया हौसला

प्रभात खबर

मन की बातः PM मोदी बोले- नशामुक्ति पर कंटेंट बनाएं
युवा, तिरंगे के साथ आईं 8 करोड़ सेल्फी

ପ୍ରମେୟ THE PRAMEYA

Forest conservation through eco-tourism: PM Modi
lauds Odia woman Maithili Bhue on 'Mann Ki Baat'

THE NEW INDIAN EXPRESS

PM Modi hails Bengaluru vendor
Ningamma in Mann Ki Baat

The Tribune
VOICE OF THE PEOPLE
ਪੰਜਾਬੀ ਟ੍ਰਿਬਿਊਨ दैनिक ट्रिब्यून

Amarnath Yatra's sanitation, waste management get
national recognition in 'Mann ki Baat'

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए
QR कोड को स्कैन करें।

आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव हमारे लिए महत्त्वपूर्ण हैं! हमें इस ईमेल एड्रेस पर लिखें : mkb-mib@gov.in

‘नशा मुक्त युवा फॉर विकसित भारत’, यह अभियान इस समय पूरे देश में तेजी से आगे बढ़ रहा है। इसका लक्ष्य बिल्कुल साफ है – नशा मुक्त युवा, ड्रग फ़्री इंडिया।

– माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार